श्री वैष्णों देवी
की
पूरी कहानी

माता की नई-नई भेटें

आरती संग्रह
माता दे टप्पे
शिव गौराँ दा विवाह

भवानी पुस्तक महल, कटड़ा वैष्णों देवी, जम्मू

श्री वैष्णों देवी की

पूरी कहानी

नौ दुर्गा की व्रत-कथा, माता की भेंटें आरती संग्रह, माता के टप्पे व शिव गौरा का विवाह

संग्रहकर्ता :

बालकृष्ण शर्मा

प्रकाशक :

भवानी पुस्तक महल

कटरा वैष्णों देवी (जम्मू)

मूल्य ६) रुपये

प्रकाशक :

भवानी पुस्तक महल

कटरा वैष्णों देवी (जम्मू)

संग्रहकर्ता :

बालकृष्ण शर्मा

मूल्य :

६) रुपये

मुद्रक :

रोशनी प्रिंटिंग प्रेस ब्रह्मपुरी शाहदरा दिल्ली-110 053

भगतां 'जय माता दी !'

सामने से आती हुई भक्तों की टोली को देखकर एक महिला ने कहा—

'जय माता दी !'

पूरी संगत ने जोश से उत्तर दिया।

यदि आपको कभी माता वैष्णों देवी कीं यात्रा करने का सौभाग्य मिला हो तो यह शब्द ही आपको फिर से यात्रा का पूरा आनन्द देने में सफल होंगे। माता वैष्णव देवी की यात्रा में अभिवादन का यही ढंग है एक लम्बे समय से आने वाले यात्रियों को परं-परा में बंधे लोग दिन-रात लगाकर जा रहे हैं इस दुर्गम पथ पर। पहाड़ की चढ़ाई चढ़ते-२ अनेकों कंठों द्वारा गाई जानेवाली भेंटों की सुरीली आवाज हमेशा२ के लिए आपके अन्तर से उतर जायेगी।

'पंजा पांडवा तेरा भवन बनाया।'

भेंट के इन शब्दों से प्रमाणित होता है कि द्वापर युग में पांडवों ने भी इस स्थान की यात्रा की थी और देवी के भवन का निर्माण करवाया था।

बाण गंगा में स्नान करके जब आप ऊपर चरण पादुका और आदिकुमारी की चढ़ाई चढ़ेंगे तो आपको अवश्य ही प्यास लगेगी। थोड़ी-२ दूर पर ही प्याऊ मिलेगी जिन्हें स्थानीय भाषा में छबील कहा जाता है। आप पानी पीने के लिए गिलास उठायेंगे तो प्याऊ वाला प्रसाद स्वरूप आंवले और छोले दे देगा। उसे खाकर पानी पीने से आपकी प्यास को तृप्ति मिलेगी उसे यहां व्यक्त नहीं किया जा सकता।

आदिकुमारी में कुछ क्षण के विश्राम के बाद आप की दृष्टि दूर तक फैली घाटियों पर जायेगी। एक ओर दूर निगाहों से ओझल हो रहा होगा 'कटरा' और दूसरी ओर आसमान से होड़ लगा रहे ऊँचे पर्वत। इस स्थान पर पहुँचकर यात्रियों के परस्पर प्रेम को देखकर ऐसा लगता है मानो स्वर्ग में आ गए हों। आपने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा होगा कि वैष्णो देवी की यात्रा इतनी रस पूर्ण होगी।

आधी यात्रा के बाद ही आपको यदि ठहरना होगा धर्मशाला वाले आपको कमरा तथा कम्बल आदि भी

दे देंगे, अन्य खाने पीने जैसी आवश्यक वस्तुयें आसानी से मिल जाती हैं आज १०-१५ वर्ष पूर्व जैसी कोई भी कठिनाई अब इस यात्रा में नहीं है इस पथ से धूलि-कणों पत्थरों ने चट्टानों ने वृक्षों ने और लताओं ने हम सबके दुखों को सुना और आज हम सबका सौभाग्य है कि दो तरह के मार्ग (सीढ़ीनुमा और घुमावदार) भवन तक बन गया है। आज के वैज्ञानिक युग ने तो हमारे लिए यहां के रास्ते और भी आसान कर दिये हैं, यहा पर बिजली के तारों के ऊपर ही चलता उड़नखटोला भी चल गया है जो हमको हर तरह से सुविधा हो गई है। बिजली के प्रकाश और संचार व्यवस्था ने तो यात्रा के आनन्द को और द्विगुणित कर दिया है।

अब आपकी दृष्टि पड़ेगी मां के दरबार की ओर तो अनजाने में ही स्वर फूटेगा।

'जय माता दी !'

इतना ही कहने पर दरबार में लगी भीड़ से आत्मीयता का रिश्ता स्थापित हो जाता है। यही अभिवादन, यही घोर कठिन मार्ग को फतेह करने का संकल्प और सहारा है, यही शब्द लोग जिन्हें गा-गाकर आप गुफा में प्रवेश कर मां के दर्शन कर आत्म-विभोर हो उठेंगे।

वैष्णव माता के अवतार की कथा

देश में विपरीत परिस्थितियां होने पर समय-२ पर महाशक्ति ने भिन्न-२ रूप धारणकर दुष्टों का नाशकर भक्तों की रक्षा की है। देवताओं के एकत्रित तेज समूह से उत्पन्न महाशक्ति ने कालांतर में महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती के रूप धारण किए। यह तीनों रूप ही रज, तम व सात्विक गुणों के प्रतीक हैं।

त्रेतायुग में जब पृथ्वी पर रावण, खर.दूषण त्रिशिरा ताड़का आदि राक्षसों ने अपने अत्याचारों से धर्मात्मा, साधु संतजनों का जीना दुर्लभ कर दिया था तथा सर्वत्र आसुरी प्रवृत्तियों का बोलबाला था, उस समय भगवती महाकाली महालक्ष्मी, महासरस्वती, सावित्री एवं गायत्री आदि महाशक्तियों ने एक स्थान पर एकत्र होकर पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के लिए अपने संमिलित तेज से एक दिव्य शक्ति को जन्म देने का निश्चय किया। फलस्वरूप उसी समय इन सभी देवियों के

शरीर से तेज की एक-एक किरण ने निकलकर संयुक्त हो, एक सुन्दर दिव्य बालिका का स्वरूप धारण कर लिया।

उस दिव्य बालिका ने प्रकट होकर महाशक्तियों से पूछा—'आपने मुझे किसलिए उत्पन्न किया है। मेरा क्या नाम है और मुझे क्या करना है?

यह सुनकर महादेवियों ने उस दिव्य बालिका से कहा—हे कन्ये! तुम्हारा नाम 'वैष्णवी' है। पृथ्वी पर धर्म की रक्षा के उद्देश्य से हमने तुम्हें प्रकट किया अब तुम दक्षिणी भारत में 'रत्नाकर सागर' के घर में पुत्री बनकर प्रकट होओ। वहां तुम विष्णु के अवतार भगवान रामचन्द्र की शक्ति सीता के अंश से उत्पन्न होओगी। तत्पश्चात् तुम आत्मप्रेरणा के अनुसार सब कार्यों को करना।

इस घटना के कुछ समय पश्चात् उस कन्या ने रत्नाकर सागर के घर जन्म लिया। वहां उसका नाम 'वैष्णवी' रखा गया।

वैष्णवी ने अल्पआयु में ही अपने रूप गुण तथा अलौकिक शक्तियों से सब लोगों को चमत्कृत करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में उस दिव्य कन्या

की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई तथा सहस्त्रों व्यक्ति रत्नाकर सागर के यहां उस कन्या के दर्शनों के लिए आने लगे।

कुछ समय के बाद वह दिव्य कन्या अपने पिता से आज्ञा प्राप्तकर, समुद्र तट के निर्जन प्रान्त में कुटी बनाकर रहने लगी। वहां हर समय श्रीरामचन्द्र जी का ध्यान व स्मरण करना ही उसका मुख्य कार्य था। उसकी तपस्या को देखकर सूर्य नारायण ने उसे एक दिव्य कमण्डल भेंट किया।

जब भगवान विष्णु ने रामचन्द्र के रूप में अयोध्या में अवतार लिया और वे अपने पिता दशरथ की आज्ञा से बनवासी हुए, उस समय वह कन्या वैष्णवी समुद्रतट पर अपनी कुटिया में समाधि लगाये हुए श्रीरामचन्द्र जी के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी।

रावण के द्वारा सीता का हरण कर लिए जाने पर रामचन्द्र वानर भालुओं की सेना को साथ लिए समुद्र तट पर पहुँचे तो वहां उस समाधिमान कन्या को भी देखा।

श्रीरामचन्द्रजी उसकी कुटिया में गये। रामचन्द्रजी के पहुँचने से वैष्णवी की समाधि भंग हो गई। राम-

चन्द्रजी को अपने सामने देखकर उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। विधिवत् स्वागत सत्कार करने के उपरान्त उस रामचन्द्रजी की स्तुति प्रार्थना की।

जब रामचन्द्रजी ने उस कन्या से तपस्या करने का कारण तथा परिचय पूछा तो उसने उत्तर दिया—हे प्रभु ! मैं रत्नाकर सागर की पुत्री 'वैष्णवी' हूँ, मैंने आपको पति के रूप में प्राप्त करने का संकल्प किया है, इसलिए मैं इतने दिनों से तपस्या कर रही थी। अब कृपा करके मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करें।

यह सुनकर रामचन्द्रजी ने कहा—'हे सुन्दरी! अपने इस अवतार में मैंने एक पत्नी व्रती होने का संकल्प किया है, फिर तुम्हारी तपस्या का फल तुम्हें प्राप्त होगा, अतः मैं यह शर्त रखना चाहता हूं कि रावण का वध करने के उपरांत किसी दिन तुम्हारी इसी कुटिया पर मैं शेश बदलकर आऊंगा उस समय यदि तुम मुझे पहचान लोगी तो मैं तुम्हें पत्नी के रूप में स्वीकार कर लूंगा अन्यथा जो दैवइच्छा।'

कहते हैं लंका से अयोध्या लौटते समय भगवान एक वृद्ध साधु का रूप धरकर कन्या के पास गए किंतु वह उन्हें नहीं पहचान सकी तो भगवान ने कन्या को

यह आश्वासन दिया कि कलियुग में कल्की अवतार मैं तुम मेरी सहचरी बनोगी उस समय तक तुम उत्तर भारत के मणिक पर्वत पर स्थित त्रिकुटपर्वत की सुन्दर गुफा मे जहां तीन महाशक्तियों का निवास है तपस्या में मग्र रहो। वहां पर तुम अमर हो जाओगी लांगुर वीर तुम्हारे प्रहरी रहेंगे। समस्त भूमंडल पर तुम्हारी महिमा फैलेगी और तुम वैष्वण देवी के नाम से प्रसिद्ध हो जाओगी।

विश्वास किया जाता है कि तभी से रत्नाकर सागर की पुत्री कुँवारी कन्या वैष्णवी जो देवियों के पुण्य आशीर्वाद से प्राप्त हुई, त्रेतायुग से सुन्दर गुफा में विराजमान है। जिसके विषय में प्राचीन कथाओं के आधार से लिया जा सकता है। युग बदलते गये माता अपनी लीला समय-२ पर करती रहीं और न जाने कितनी ही अन्य कथाओं का जन्म हुआ। कलियुग में जिस कथा के कारण इस स्थान का प्रचार अधिक हुआ वह इस प्रकार है।

भक्त श्रीधर की कथा

कहा जाता है कि लगभग सात सौ वर्ष पहले माता के परम भक्त श्रीधरजी हुए जो कटरा से लगभग दो किलोमीटर की दूरी पर बसे हंसाली नामक गाव में रहते थे। वे नित्य नियम से कन्या पूजन किया करते थे। सन्तान न होने के कारण वह बहुत दुःखी रहते थे। अतः संतानप्राप्ति की कामना से भगवती दुर्गा का पूजन भी करने लगे। लम्बे समय तक देवी का पूजन और कन्याओं को भोजन कराते रहने पर भी जब उन के सँतान न हुई तो एक दिन उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक मां भगवती स्वयं आकर उन्हें भोजन न करायेंगी वह भूखे ही रहेंगे।

अपने भक्त की ऐसी कठोर प्रतीज्ञा देखकर माता का हृदय पिघल गया और भक्तजी को दर्शन देने का विचार करके मां एक दिन कन्या रूप धरकर अन्य कन्याओं के साथ बैठ गई। अन्य सभी कन्यायें तो रोज की भांति चली गई लेकिन वह कन्या रूपी भगवती वहीं बैठी रही, उसे बैठी देखकर श्रीधरजी ने उस दिव्य कन्या से उसका नाम पूछा तो उसने उत्तर दिया कि

पहले तुम भोजन करलो फिर मैं तुम्हें अपना परिचय दूंगी। श्रीधर ने कहा 'मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि जब तक स्वयं माता आकर मुझे भोजन न करायेंगी, मैं भोजन नहीं करूंगा।

अबकी बार दिव्य स्वरूप कन्या का उत्तर था कि वह ही भगवती दुर्गा है। उनकी तपस्या से खुश होकर ही कन्या का रूप धरकर आई है। अब प्रसन्न हो जाओ मैं तुमको अपने हाथों से भोजन कराऊंगी।

भोजन कराने के बाद कन्या ने कहा—हे भक्त जी यहां समीप ही त्रिकुट पर्वत की गुफा में मेरा निवास है। श्रीदुर्गाजी के अन्य स्वयुप वैष्णव रुप में मैं तपस्या करती हूँ। कई शताब्दियों से गुफा का भाग ठीक न होने के कारण भक्त मेरा दर्शन नहीं कर पाते। अतः अबकी बार तुम ही इस सेवा को करो और अन्य भक्तों को मेरे निवास से परिचय कराओ। मैं तुम्हारा वंश सदा ही मेरी आराधना करता रहेगा।

इस कथा का एक रुप इस प्रकार भी है कि भक्त श्रीधर की सच्ची उपासना और अडिग विश्वास को

देखकर मां वैष्णो को स्वयं एक दिन कन्या का रुप धारण करके आना पड़ा। भक्त जी कन्या पूजन की तैयारी कर रहे थे, छोटी-२ कन्यायें उपस्थित थीं। उन्हीं में मां वैष्णवो भी कन्या बनकर आ गई। नियम के अनुसार पांव धोकर भोजन परोसते समय श्रीधर जी की दृष्टि उस महादिव्यरुपी कन्या पर पड़ी भक्त जी विस्यम में डूब गये क्योंकि यह कन्या उन्होंने पहले कभी नहीं देखी थी।

अन्य सभी कन्यायें तो दक्षिणा पाने के बाद यहां से चली गई परन्तु वह महाकन्या वहीं बैठी रही, श्रीधर जी इससे पहले कुछ पूछते वह कन्या रुपी महाशक्ति स्वयं ही बोली—मैं तुम्हारे पास एक कार से आई हूं छोटी-सी कन्या के मुख से ऐसी विचित्र बात सुनकर भक्त जी बहुत हैरान हुए।

कन्या ने कहा कि आश अपने गांव में और आस-पास यह संदेश दे आओ कि कल दोपहर आपके यहां एक महान भंडारे का आयोजन है। इतना कहकर वह कन्या लोप हो गई।

श्रीधर जी विचारों में डूब गए।

आखिर वह कन्या कौन थी ? परन्तु भंडारे वाली समस्या ने भक्तजी को परेशान कर दिया। अन्त में

वह कन्या की आज्ञा को ही मानते हुए समीपवर्ती गांवों में भँडारे का निमन्त्रण देने निकल पड़े।

श्रीधर जी भँडारे का निमँत्रण देने एक गांव से दूसरे गांव जा रहे थे तो मार्ग में साधुओं के एक दल को देखकर उन्होंने प्रणामकर होने वाले भँडारे पर पधारने को कहा। दल के मुखिया गोरखनाथजी भक्त का नाम पूछकर बोले—श्रीधर तुम मुझे भैरवनाथ और अन्य ३६० चेलों को निमँत्रण देने में भूल कर रहे हो हमें तो देवराज इन्द्र भी भोजन न दे सके।

इस पर श्रीधर ने उन्हें कन्या के आगमन की कथा सुनाई। गुरु गोरखनाथ जी ने विचार किया कि ऐसी कौनसी कन्या है जो सबको भोजन खिला सकती है। परीक्षा करके देखनी चाहिए और उन्होंने भक्त जी का निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

भँडारे के दिन श्रीधर को तो होश ही न था कि प्रबँध कैसे हो और भीड़ इकट्ठी होने लगी। गोरखनाथ व भैरोंनाथ जी भी अपने-२ चेलों सहित आ पहुँचे। भक्त जी के सँमुख आकर वह दिव्य कन्या बोली अब सब चिन्तायें छोड़िए सब प्रबंध हो चुका है जोगियों से चलकर कहिए कि कुटिया में बैठकर भोजन करें। श्रीधर उत्साह से गुरु के पास जाकर बोले चलिये कुटिया

में बैठकर भोजन कीजिए इस पर गुरुजी ने कहा कि हम सब तो कुटिया में नहीं आ सकते क्योंकि उसमें स्थान ही बहुत कम है। श्रीधर जी ने कहा जोगीनाथ देवी कन्या ने ऐसा ही कहा है।

जिस समय जोगी कुटिया में गए तो सबके सब आराम से बैठ गए और स्थान फिर भी बच गया। कन्या ने किसी विचित्र पात्र से निकाल सबकी इच्छानुसार भोजन देना आरम्भ कर दिया तो आश्चर्य की सीमा न रही। सबके सब देखते रह गए। यह देख कर श्रीधर जी प्रसन्न हो गए।

—:o:—

भैरवनाथ की कथा

भंडारे के समय गुरु गोरखनाथ और भैरवनाथ ने परस्पर विचार-विमर्श किया कि यह कन्या अवश्य ही कोई शक्ति है। यह वास्तव में कौन है। इसका पता लगाना चाहिए। सबको भोजन परोसती हुई कन्या जिस समय भैरवनाथ के पास पहुँची तो वे बोले कन्या

सबको उनकी इच्छानुसार भोजन दे रही है लेकिन मुझको नहीं दे सकती।

'बोलो जोगीनाथ तुमको क्या चाहिए ?' कन्या ने पूछा—भैरों ने देवी से मांस और मदिरा मांगी तो कन्या ने उसे आदेश के स्वर में कहा—यह एक ब्राह्मण के घर का भंडारा है और जो कुछ वैष्णव भण्डारे में होता है वही मिलेगा।

भैरव हठ करने लगा क्योंकि उसने तो कन्या की परीक्षा लेनी थी। लेकिन भैरवनाथ के मन की बात भी देवी पहले ही जानती थी। ज्यों ही भैरवनाथ ने क्रोध से कन्या को पकड़ना चाहा वह कन्यारुपी महा-शक्ति लोप हो गई। भैरवनाथ ने भी उसी समय से उसकी खोज और पीछा करना आरम्भ कर दिया।

०:..:०

यात्रा के प्रमुख स्थान और उनका इतिहास

दर्शनी दरवाजा—कन्या भण्डारे वाले स्थान से लोप होकर इस दर्शनी दरवाजा नामक स्थान से होकर ही त्रिकूट-पर्वत की ओर गई थी। उसकी स्मृति में यह स्थान बना है। त्रिकूट पर्वत का सबसे पहला दर्शनी दरवाजा है कटरा से यह स्थान लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर है।

बाण गंगा—कन्या रूपी महाशक्ति जब उस स्थान से होकर आगे बढ़ी तो उसके साथ बीर लांगुर भी था। चलते-२ वीर लांगुर को प्यास लगी तो देवी ने पत्थरों में बाण मारकर गंगा प्रवाहित कर दी और अपने बीर की प्यास को तृप्त कर दिया। उसी गंगा में ही देवी ने अपने केश धोकर संवारे इसलिए इसे बाण गंगा भी कहते हैं यह स्थान कटरा से दो किलो-मीटर और पिछले दर्शनी दरवाजा नामक स्थान से एक किलोमीटर है। एक पुल द्वारा उस गंगा को पार करके आगे बढ़ते हैं। समीप ही मन्दिर है। अधिकांश लोग यहां भी स्नान करते हैं। यहां से सीढ़ियों वाला पक्का मार्ग आरम्भ हो जाता है। साथ ही कच्चा

मार्ग भी है जिससे खच्चर घोड़े आते जाते हैं।

चरण पादुका—इस स्थान पर रुककर देवी ने पीछे की ओर देखा था कि भैरवनाथ आ रहा है, या नहीं। रुकने के कारण इस जगह पर माता के चरण चिन्ह बने जिसके कारण इस जगह को चरण पादुका का नाम दिया गया। बाण गंगा से यह स्थान डेढ़ किलोमीटर है। वैष्णों देवी यात्रा का यह स्थान दूसरा विश्राम स्थान है। एक दो चार चाय आदि की दुकानें भी हैं।

आदिकुमारी और गर्भजून गुफा- चरण पादुका से काफी दूर पहुंचकर वैष्णवी कन्या ने बैठे एक तपस्वी को अपनी झलक दिखाई और कहा—हे तपस्वी। मैं यहां कुछ देर आराम करूंगी, कोई मेरे बारे में पूछने आये तो कुछ मत बताना। यह कहकर शक्ति पास की गुफा में चली गई और जिस प्रकार बालक माता के गर्भ में नौ मास तक रहता है उसी प्रकार कन्या गुफा में नौ महींने तक तपस्या में लीन रही। उधर भैरवनाथ भी कन्या की खोज करता हुआ यहां तक आ पहुंचा। उतने तपस्वी से पूछा—क्या तुमने किसी कन्या को इधर से जाते हुए देखा है ?

यह सुनकर तपस्वी ने भैरवनाथ से कहा—जिसे तू साधारण कन्या समझता है वह तो महाशक्ति है और आदिकुमारी है। अर्थात् जब से सृष्टि की रचना है तभी से उसने कोमार्य व्रत धारण किया है जा यहां से चला जा भैरव हठ करके गुफा के अन्दर घुसा तो गुफा में बैठी हुई देवी ने अपने त्रिशूल के प्रहार से गुफा के पीछे से दूसरा मार्ग बनाया और बाहर निकल गई। देवी कन्था आगे चली गई और भैरोंनाथ पीछा करता रहा।

यह स्थान चरण पादुका से ४-५ किलोमीटर है यहां भगबती वैष्णों देवी का आदि कुमारी नाम से मन्दिर है। ठहरने के लिए काफी बड़ी धर्मशाला है। समीप ही पक्का तालाब भी है जो यात्री वहा पर विश्राम करना चाहें वह शेष यात्रा दूसरे दिन कर सकते हैं। खाने-पीने की कई दूकानें हैं। गर्भजून दर्शनीय हैं।

हाथी मत्था—आदिकुमारी से पहाड़ की चढ़ाई हाथी के मत्थे जैसी सीधी खड़ी हो जाती है। शिखर को हाथी मत्था कहा जाता है, यहां सीढ़ियों वाले मार्ग की अपेक्षा घुमावदार कच्चे मार्ग से जाना अच्छा रहता है। यह स्थान आदिकुमारी से २.५ किलोमीटर

है। यहां चाय फल आदि की दुकानें हैं।

सांझी छत—हाथी मत्था से २ किलोमीटर का सीधा मार्ग है यहां से भैरव मन्दिर के लिए एक छोटा रास्ता जाता है यहां चाय की दुकानें और प्याऊ हैं।

सामान्यत: यात्री हाथी मत्था से सांझी छत की ओर र जाकर नये रसाते से दिल्ली वाली छबीली ोकर दरबार की ओर जाते हैं। क्योंकि भैरव मंदिर के दर्शन का विधान भी लौटती बार ही है। इस प्रकार यात्रियों को लगभग २ किलोमीटर कम चलना हड़ता है।

भैरव मन्दिर—देवी कन्या आगे बढ़ती रही, भैरवनाथ पीछा करता रहा। देवी ने भैरव को आदेश भी दिया कि वापिस चले जाओ। किन्तु भैरव न माना। यदि महामाया चाहती तो सब कुछ कर सकती थी। लेकिन भैरव की जिज्ञासा भी सच्ची थी। अन्त में त्रिकुट पर्वत की सुन्दर गुफा तक पहुंची। गुफा के द्वार पर उसने अपने लांगुर वीर को प्रहारी बना कर खड़ा किया और भैरवनाथ को अन्दर आने से रोकने के लिए कहा। कन्या जब गुफा में घुस गई तो भैरव भी पीछे जाने लगा। लांगुर वीर ने उसे जाने से रोका तो दोनों का युद्ध हुआ। लांगुर वीर जब परास्त होने लगा तो शक्ति ने स्वयं चण्डी रुप

धरकर उसका वध कर दिया। धड़ वहीं गुफा पर और सिर घाटी में गिरा जिस घाटी में सिर गिरा उसे अब भैंरव घाटी कहा जाता है।

भैरव का सिर धड़ से अलग होने पर आवाज आई हे आदि शक्ति! हे जगदम्बा! मुझे मरने का कोई दुःख नहीं क्योंकि स्वयं शक्ति के हाथ मरा हूँ। हे मातेश्वरी! मुझे क्षमा करो मुझे क्षमा न किया तो आने वाला युग मुझे पापी की नजरों से देखेगा और लोग मेरे नाम से घृणा करेंगे। भैरोंनाथ के मुख से वारम्बार 'मां' का सम्बोधन सुनके माता ने उसे वरदान दिया कि मेरे बाद तेरी भी पूजा होगी। मेरे भक्त मेरे दर्शनों के बाद-तेरा भी दर्शन किया करेंगे तभी उनकी यात्रा सफल होगी। तेरे स्थान का दर्शन करने वाले लोगों की भी मनोकामनायें पूर्ण होंगी।

इस कथा के आधार पर यात्री मां के दर्शनों के बाद ही भैरों मन्दिर की ओर जाते हैं। जिस स्थान भैरोंनाथ का सिर गिरा था। उसी जगह भैरों के मन्दिर का निर्माण हुआ है सांझीछत के मन्दिर १.५ किलोमीटर है। आस-पास १-२ चाय की दुकानें भी हैं।

दरबार के दर्शन-उधर भक्त श्रीधर जी का

मन, कन्यां के अचानक भण्डारे से लोप हो जाने के कारण अत्यधिक दुःखी हुआ उन्होंने खाना-पीना ही त्याग दिया तो एक रात को स्वप्न में वैष्णों देवी ने उन्हें दर्शन दिए और अपने दरबार की यात्रा भी करवाई गुफा के अन्दर तीनों महाशक्तियों का निवास भी दिखा दिया। दूसरे दिन प्रातः ही स्वप्न में देखे स्थानों से उसका मन पुलकित था वे अब प्रसन्न रहने लगे और यथावत भोजन करते थे परन्तु भक्त जी उसी दिन से स्वप्न में देखे स्थान की साक्षात् खोज में जुट गए। स्वप्न में देखे मार्ग के अनुसार एक दिन चलते २ उन्होंने गुफा को भी खोज निकाला और उसका खूब प्रचार करते रहे। उनको वरदान के अनुसार चार पुत्र रत्न भी मिले। आज तक भी उन्हीं का वंश मां की पूजा करता है।

जिन।जिन भक्तों ने दर्शन किए उनकी मनोकामनायें पूरी होती रहीं। प्रचार बढ़ता रहा। धीरे-धीरे यात्री प्रतिवर्ष दर्शनों की अभिलाषा लेकर जाने लगे।

पर्वत के आंचन में मां का दरबार भैरों मंदिर से २.५ किलोमीटर है। कई बड़ी-बड़ी धर्मशालायें बन चुकी हैं। ओढ़ने-बिछाने के कम्बल २४ घण्टे धर्मार्थ संस्थाओं द्वारा प्राप्त हैं। होटल चाय पूरी आदि की

दुकानें हैं। डाक तार व टेलीफोन की सुविधा है।

गुफा के अन्दर पिण्डी दर्शन—गुफा में प्रवेश करने से पूर्व स्नान करने का नियम है। स्नान के लिए गुफा में बहने वाली चरण गंगा की धारा बाजार के अंत में है। वहीं ठहरने के लिए अच्छा स्थान भी बना है गुफा के अंत में महा लक्ष्मी सरस्वती एवं महाकाली तीन अन्य पिण्डियों के रूप में विराजमान हैं। कुछ लोग इन तीनों पिण्डियों के मध्य वाली माता को वैष्णों देवी भी कहते हैं यहीं बैठे पुजारी भेट आदि लेकर पूजन करवा देते हैं। दर्शन कर नई गुफा से वापिस आना पड़ता है। इस प्रकार माता वैष्णों देवी के दरबार, भवन और गुफा के पवित्र दर्शनों का पुण्य लूटकर यात्री वापिस कटरा के लिए जाते हैं। जैसा कि पहले लिखा जा चुका है।

सूर्य कुण्ड—गुफा के ठीक ऊपर की ओर ६ कि. मी. दूरी पर स्थित इस स्थान से सूर्योदय का दृश्य बहुत ही सुन्दर दिखाई पड़ता है।

रसायन गुफा—गुफा में जो चरण गंगा बहती है उसी चरण गंगा के किनारे २ ईश गुफा तक का मार्ग है इस गुफा में भगवती के दर्शन के अलावा विष्णु राम सीता, राधा कृष्ण, शालिग्राम आदि अनेक देवताओं के दर्शन हैं। यह दरबार से ३ कि. मी. है।

महारानी तारादेवी की कथा

माता के जगराते में महारानी तारा देवी की कथा कहने सुनने की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आती है। यद्यपि पुराणों या ऐतिहासिक पुस्तकों में इसको सम्मिलित करने की परम्परागत विधान है। जो इस प्रकार है :—

महाराजा दक्ष के दो पुत्रियां तारादेवी एवं रुकमण भगवती दुर्गा जी की शक्ति में अटूट विश्वास रखती थीं। दोनों बहनें नियमपूर्वक एकादशी का व्रत किया करती थीं तथा माता के जागरण में प्रेम के साथ कीर्तन एवं महात्म्य कहा सुना करती थी।

एकादशी के दिन एक बार भूल से छोटी बहन रुकमन ने मांसाहार कर लिया। जब तारादेवी को पता लगा तो उसे रुकमन पर क्रोध आया वह बोली-- तू है तो मेरी बहन परन्तु मनुष्य देही पाकर भी तूने नीच योनि के प्राणी जैसा कर्म किया है तू तो छिपकली बनने योग्य है। बड़ी बहन के मुख से निकले शब्दों को रुकमन ने शिरोधार्य कर लिया और साथ ही प्रायश्चित का उपाय पूछा। तारा ने कहा—त्याग एवं परोपकारों से सब पाप छूट जाते हैं।

दूसरे जन्म में तारादेवी इन्द्रलोक की अप्सरा बनी और छोटी बहन रुकमन छिपकली योनि गे प्रायश्चित का अवसर ढूंढने लगी ।

द्वापर युग में जब पांच पाण्डवों ने अश्वमेघ यज्ञ किया तब उन्होंने दूत भेजकर दुर्वासा ऋषि सहित तैंतीस करोड़ देवताओं को निमन्त्रण दिया । जब दूत दुर्वासा ऋषि के स्थान पर निमन्त्रण लेकर गया तो दुर्वासा ऋषि बोले—यदि तैंतीस करोड़ देवता उस यज्ञ में भाग लेंगे तो मैं इस यज्ञ में सम्मिलित नही हो सकता । दूत तैंतीस करोड़ देवताओं को निमन्त्रण देकर वापिस पहुँचा और दुर्वासा ऋषि का वृदान्त पांडवों को कह सुनाया कि वह सब देवताओं को बुलाने पर नही आवेंगे ।

यज्ञ आरम्भ हुआ । तैंतीस करोड़ देवता यज्ञ में भाग लेने आये उन्होंने दुर्वासा ऋषि जी को न देखकर पांडवों से पूछा कि ऋषि को क्यों नहीं बुलाया । इस पर पांडवों ने नम्रता सहित उत्तर दिया कि निमन्त्रण भेजा था परन्तु वे अहंकार के कारण नहीं आये । यज्ञ में पूजन हवन आदि निर्विघ्न समाप्त हुए । भोजन के लिए भण्डारे की तैयारी होने लगी ।

दुर्वासा ऋषि ने देखा कि पांडवों ने उनकी उपेक्षा

कर दी है तो उन्होंने अत्यन्त क्रोध करके, पक्षी का रूप धारण किया और चोंच में सर्प लेकर भण्डारे में फेंक दिया जिसका किसी को कुछ भी पता नहीं चला। वह सर्प खीर मी कढ़ाई में गिरकर छिप गया। एक छिपकली जो पिछले जन्म में तारादेवी की छोटी बहिन थी तथा बहिन के शब्दों को शिरोधार्य कर इस जन्म में छिपकली बनी सर्प का भण्डारे में गिरना देख रही थी। उसे त्याग व परोपकार की शिक्षा अब तक याद थी। वह भण्डार घर की दीवार पर चिपकी समय की प्रतीक्षा करती रही। कई लोगों के प्राण बचाने हेतु उसने अपने प्राण न्यौछावर कर देने का मन ही मन निश्चय किया। जब खीर भण्डारे में जाने वाली थी तो सबकी आंखों के सामने वह छिपकली दीवार से कूदकर कढ़ाई में जा गिरी।

निदान, लोग छिपकलो को बुरा भला कहते हुए खीर के कढ़ाये को खाली करने लगे, उस समय उन्होंने उसमें मरे हुए सांप को देखा। अब सबको मालूम हुआ कि छिपकली ने अपने प्राणों को देकर के उन सबके प्राणों की रक्षा की है। इस प्रकार उपस्थित सभी सज्जनों और देवताओं ने उस छिपकली के लिए प्रार्थना मी कि उसे सब योनियों से उत्तम मनुष्य जन्म

प्राप्त हो तथा अन्त में मोक्ष को प्राप्त करे। तीसरे जन्म में छिपकली राजा 'सपरश' के घर कन्या बनी दूसरी बहिन तारादेवी ने फिर मनुष्य का जन्म लेकर तारामती नाम से अयोध्या में प्रतापी राजा हरिश्चन्द्र के साथ विवाह किया।

राजा सरपश ज्योतिषियों से कन्या की कुण्डली बनवाई। ज्योतिषियों ने राजा को बताया कि कन्या राजा के लिए हानिकारक सिद्ध होगी, शकुन ठीक नहीं है अतः आप इसे मरवा दीजिए। राजा बोला—लड़की को मारने का पाप बहुत बड़ा है। मैं उस पाप का भागी नहीं बन सकता। तब ज्योतिषियों ने विचार करके राय दी—हे राजन! आप एक लकड़ी के संदूक में ऊपर से सोना-चांदी आदि जड़वा दें। फिर उस सन्दूक के भीतर लड़की को बन्द करके नदी में प्रवाहित कर दीजिए। सोना-चांदी जड़ित लकड़ी का संदूक अवश्य ही कोई लालच से निकाल लेगा और आपकी कन्या को भी पाल लेगा। आपको किसी प्रकार का पाप नहीं लगेगा ऐसा ही किया गया और नदी में बहता हुआ संदूक काशी के समीप एक भंगी को दिखाई दिया।

वह संदूक को नदी से बाहर निकाल लाया। जब

खोला तो सोना-चांदी के अतिरिक्त अत्यन्त रूपवान कन्या दिखाई दी। उस भंगी के कोई संतान नहीं थी। जब उसने अपनी पत्नी को कन्या दी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। उसने अपनी सन्तान के समान ही बच्ची को छाती से लगा लिया। भगवती की कृपा से उसके स्तनों में दूध उतर आया। पति-पत्नी दोनों ने प्रेम से कन्या का नाम 'रुक्को' रख दिया।

जब वह कन्या विवाह के योग्य हुई तो भंगी ने उसका विवाह अयोध्या के सजातिय युवक के साथ बड़ी धूमधाम से किया। इस प्रकार पहले जन्म की रुकमण, दूसरे जन्म में छिपकली तथा तीसरे जन्म में 'रुक्को' बन गई।

रुक्को की सास महाराजा हरिश्चन्द्र के घर सफाई आदि का काम करने जाया करती थी। एक दिन वह बीमार पड़ गई। निदान रुक्को महाराज हरिश्चंद्र के घर काम करने के लिए पहुंच गई। महाराजा की पत्नी तारामती ने जब रुक्को को देखा तो वह अपने पूर्व जन्म के पुण्य से उसे पहिचान गई। तब तारामती ने रुक्को से कहा—हे बहन ? तुम यहां मेरे निकट आकर बैठो। महारानी की बात सुनकर रुक्को बोली—रानी जी ? मैं नीच जाति की भंगिन हूं, भला मैं

आपके पास कैसे बैठ सकती हूं।

तब तारामती ने कहा—बहिन ! पूर्व जन्म में तुम मेरी सगी बहिन थी। एकादशी का व्रत खण्डित करने के कारण तुम्हें छिपकली की योनि में जाना पड़ा। जो होना था सो हो चुका। अब तुम अपने इस जन्म को सुधारने का उपाय करो तथा भगवती माता की सेवा करके अपना जन्म सफल बनाओ।

यह सुनकर रुक्को को बड़ी प्रसन्नता हुई और उसके उसका उपाय पूछा—रानी ने बताया कि वैष्णों माता सब मनोरथों को पूरा करने वाली हैं जो लोग श्रद्धापूर्वक माता का पूजन व जागरण करते हैं, उनकी सब मनोकामनायें पूर्ण होती हैं।

रुक्को ने खुश होकर माता की मनौती करते हुए कहा—हे माता ! यदि आपकी कृपा से मुझे एक पुत्र प्राप्त हो जाए तो मैं भी आपका पूजन व जागरण कराऊंगी। प्रार्थना को माता ने स्वीकार कर लिया, फलस्वरूप दसवें महीने उसके गर्भ से एक अत्यंत सुंदर बालक ने जन्म लिया। परंतु दुर्भाग्यवश रुक्को को माता का पूजन व जागरण करने का ध्यान ही न रहा। परिणाम यह हुआ कि जब वह बालक पांच वर्ष का हुआ तो एक दिन उसे तेज बुखार आ गया और तीसरे दिन उसे चेचक माता निकल आई।

रुक्को दुःखी होकर अपने पूर्व जन्म की बहिन तारामती के पास गई और बच्चे की बीमारी का सब वृदांत कह सुनाया। तब तारामती ने कहा—तू जरा ध्यान करके देख कि तुझसे माता के पूजन में कोई भूल तो नहीं हुई।

इस पर रुक्को को छः वर्ष पहले की बात का ध्यान आ गया और उसने अपना अपराध स्वीकार किया कि बच्चे को आराम आने पर अवश्य जागरण कराऊंगी।

भगवती की कृपा से बच्चा दूसरे ही दिन ठीक हो गया। तब रुक्को ने देवी के मंदिर में जाकर पंडित से कहा कि मुझे अपने घर माता का जागरण करना है, सो आप मंगलवार को मेरे घर पधारकर कृतार्थ करें। पण्डित जी बोले--अरी रुक्को, तू यहीं पांच रुपये दे जा, हम तेरे नाम से मंदिर में जागरण करवा करवा देंगे। तू नीच जाति की स्त्री है। इसलिए हम तेरे घर में जाकर देवी का जागरण नहीं कर सकते।

रुक्को ने कहा—है पण्डित जी माता के दरबार में तो ऊंच-नीच का कोई विचार ही नहीं होता वे तो सब भक्तों पर समान रूप से कृपा करती हैं। अतः आपको कोई ऐतराज नहीं होना चाहिए। इस पर पण्डितों ने आपस में विचार करके कहा—यदि महारानी तारामती तुम्हारे जागरण में पधारे तब तो हम

भी स्वीकार कर लेंगे ।

यह सुनकर रुक्को महारानी के पास गई और सब वृत्तांत कह सुनाया । तारामती ने जागरण मे सम्मिलित होना सहर्ष स्वीकार कर लिया । जिस समय रुक्को पण्डित से यह कहने गई कि महारानी जी जागरण में आवेंगी । उस समय सैनसाई ने सुन लिया और महाराज हरिश्चन्द्र को जाकर सूचना दी । राजा ने सैननाई से सब बात सुनकर कहा कि तेरी बात झूठी है । महारानी भंगियों के घर जागरण में नहीं सकती फिर भी परीक्षा लेने के लिए राजा ने रात को अपनी उंगली पर थोड़ा चीरा लगा लिया जिससे नींद न आवे । रानी तारामती ने जब यह देखा कि जागरणं का समय हो रहा है परन्तु राजा को नींद नहीं आ रही तो उसने माता वैष्णों से मन ही मन प्रार्थना की कि हे माता ! आप किसी उपाय से राजा को सुला दें ताकि मैं जागरण में सम्मिलित हो सकूं । जब राजा को नींद आ गई तो रानी तारामती ने रोशनदान से रस्सी बांधकर महल से उतरी और रुक्को के घर जा पहुंची ।

उस समय जल्दी के कारण रानी के हाथ का रेशमी साल तथा पांव की एक पायल रास्ते में गिर

पड़ी। उधर थोड़ी देर बाद राजा हरिश्चंद्र की नींद खुल गई। तब वह भी रानी का पता लगाने निकल पड़ा। मार्ग में पायल और रूमाल उसने देखे और जागरण वाले स्थान पर जा पहुंचा। राजा ने दोनों चीजें रास्ते से उठाकर अपने पास रख ली और जहां जागरण हो रहा था, वहां एक कोने में चुपचाप बैठ कर सब दृश्य देखने लगा।

जब जागरण समाप्त हुआ तो सबने माता की आरती व अरदास की। उसके बाद प्रसाद बांटा गया। रानी तारामती को जब प्रसाद मिला तो उसने झोली में रख लिया। यह देखकर लोगों ने पूछा आपने प्रसाद क्यों नहीं खाया यदि आप न खावेंगी तो कोई भी प्रसाद नही खायेगा। रानी बोली—तुमने जो प्रसाद दिया वह मैंने महाराज के लिए रख लिया। अब मुझे मेरा प्रसाद दे दो अब की बार प्रसाद लेकर तारा ने खा लिया। इसके बाद सब भक्तों ने माता का प्रसाद खाया।

इस प्रकार जागरण समाप्त करके, प्रसाद खाने के पश्चात् रानी तारामती घर की ओर चली। तब राजा ने आगे बढ़कर रास्ता रोक लिया और कहा—तूने नीचों के घर का प्रसाद खाकर अपना धर्म नष्ट कर लिया है, अब मैं तुझे अपने घर कैसे रखूं। तूने तो कुल की मर्यादा मेरी प्रतिष्ठा का कोई ध्यान नहीं रखा। जो

प्रसाद तू अपनी झोली में रखकर मेरे लिए लाई है उसे खिलाकर मुझे भी अपवित्र करना चाहती है। ऐसा कहते हुए जब राजा ने झोली की ओर देखा तो भगवती की कृपा से प्रसाद के स्थान पर उसमें चम्पा, गुलाब, गेंदा के फूल कच्चे चावल और सुपारिया दिखाई दीं।

यह चमत्कार देखकर राजा आश्चर्यचकित रह गया राजा हरिश्चंद्र रानी तारा को साथ लेकर वापिस लौट आया। वहां रानी ने ज्वाला मैया की शक्ति से बिना किसी माचिस या चकमक पत्थर की सहायता के लिए, राजा को अग्नि प्रज्वलित करके दिखाई, जिसे देखकर राजा का आश्चर्य और बढ़ गया। राजा के मन में देवी के प्रति विश्वास तथा श्रद्धा जाग उठी।

इसके बाद राजा ने रानी से कहा—मैं माता के प्रत्यय दर्शन करना चाहता हूं। रानी बोली—प्रत्यय दर्शन पाने के लिए बहुत बड़ा त्याग होना चाहिए यदि आप अपने पुत्र रोहितास की बलि दे सकें तो आपको दुर्गा देवी के प्रत्यक्ष दर्शन भी प्राप्त हो सकते हैं। राजा के मन में देवी के दर्शन की लगन हो गई थी। राजा ने पुत्र का मोह त्याग कर रोहितास का सिर देवी को अर्पण कर दिया। ऐसी सच्ची श्रद्धा एवं विश्वास देख

दुर्गा माता सिंह पर सवार होकर उसी समय वहाँ प्रकट हो गई और राजा हरिश्चंद्र दर्शन करके कृतार्थ हुए मरा हुआ पुत्र भी जीवित हो गया। यह चमत्कार देख राजा हरिश्चँद्र गद्‌गद्‌ हो गया। उन्होंने विधिपुर्वक माता का पूजन करके अपराधों की क्षमा मांगी। सुखी रहने का आशीर्वाद देकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

राजा ने तारा रानी की भक्ति की प्रशंसा करते हुए कहा—हे तारा मैं तुम्हारे आचरण से अति प्रसन्न हूं। मेरे धन्य भाग, जो तुम मुझे पत्नी के रुप में प्राप्त हुई। उवके पश्चात्‌ राजा हरिश्चंद्र ने रानी तारा देवी की इच्छानुसार अयोध्यापुरी में माता का एक भव्य मन्दिर तैयार करवाया रानी तारा देबी एवं रुक्कन भंगिन दोनों ही मनुष्य योनि से छूठकर देवलोक को प्राप्त हुई।

माता के जागरण में रानी तारा की इस कथा को जो मनुष्य भक्ति पूर्वक पढ़ता या सुनता है, उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, सुख एवं समृद्धि बढ़ती हैं, शत्रुओं का नाश एवं सर्व मंगल होता है। इस कथा के बिना जागरण पूरा नहीं माना जाता।

॥ बोल सांचे दरबार की जय ॥

राजा चंद्रदेव की कथा

प्राचीनकाल में जम्मू के राजा चंद्रदेव बड़े धर्मात्मा और दानी थे। उनकी राजधानी जम्बू नगरी थी। उन्होंने कई नये मन्दिरों का निर्माण करवाला तथा अनेक स्थान-स्थान पर सदाव्रत लगवाये। ऐश्वर्य और दान आदि से किसी प्रकार की कमी न थी। परन्तु दुर्भाग्यवश उनके कोई सन्तान न थी। रानी धर्मवतीं भी इसी कारण दुःखी रहा करती थी।

एक वार राजा चंद्रदेव रानी सहित गंगा स्नान के लिए हरिद्वार गए। वहां उन्होंने महातमा हंसदेव जी का प्रवचन सुना और प्रभावित हुए। उन्होंने महातमा जी से विनती की वह रानी धर्मवती को सन्तान प्राप्त होने का आशीर्वाद प्रदान करें। महातमा हंसदेव जी बोले–

है राजन् ! आप सन्तान प्राप्त सर्वोत्तम चण्डी पाठ सम्पन्न करावें। इसके अतिरिक्त आपके राज्य में पर्वत की गुफा में भगवती वैष्वी शक्ति का निवास है। वहां दर्शन एवं पूजन से मनोरथ पूरे होते हैं।

महात्मा हन्सदेव जी के वचन हृदय में रखकर राजा चन्द्रदेव राजधानी लोटे। फिर उन्होंने विधि-पूर्वक चण्डी पाठ एवं यज्ञ कराया। फलस्वरूप भगवती की कृपा से परम रूपवती कन्या प्राप्त हुई, जिसका नाम चन्द्रभागा रखा गया। कुछ समय बीतने पर अत्यन्त तेजस्वी सुन्दर पुत्र ने रानी की कोख से जन्म लिया। राजा रानी धन्य हो गए।

राजकुमारी के युवा होने पर उसका विवाह महेशपुर के राजकुमार के साथ हो गया। कुछ समय बाद चन्द्रशील का विवाह था तो महात्मा हन्सदेव जी जम्मू पधारे। वहां उन्होंने राजकुमारी चन्द्रभागा का ललाट देखकर कहा कि ये सातवें दिन विधवा हो जायेगी। इस पर सब सम्बन्धी महात्मा जी के चरणों पर गिरकर उपाय पूछने लगे। हन्सदेव जी ने कहा— यहा त्रिकुट पर्वत पर माता वैष्णों देवी का निवास है उसकी कृपा हो जाये तो मौत टल सकती है।

ठीक एक सप्ताह बाद ही राजकुमार शांताकार

के सिर पर पेड़ की डाल गिरने से उसका देहांत हो गया चारों ओर शोक फैल गया। तब चन्द्रभागा ने प्रण किया कि जब तक वैष्णों देवी उसके पति को जीवित न करेगी वह भोजन न करेगी। इसके बाद उसने पति के शव को सुरक्षित रखवा दिया। निराहार व्रत करते हुए चन्द्रभागा को नौ दिन बीत गए। दसवें दिन देवी ने प्रसन्न होकर दर्शन दिए और वर मांगने की अधिकारी नहीं हो सकती। इस पर देवी ने शांताकार को जीवित कर दिया तो चन्द्रभागा ने वर मांगा कि युगों तक देवी उन्हीं के राज्य में निवास करें।

चिनाव के तट पर बसे वजीराबाद में दूसरी याद में मन्दिर बना है और यात्री माता के दर्शन पर मनवांछित फल पाते हैं।

ध्यानू भक्त की कथा

जिन दिनों भारत में मुगल सम्राट अकबर का शासन था, उन्हीं दिनों यह घटना है। निदोन ग्राम निवासी माता का एक सेवक ध्यानू भक्त एक हजार यात्रियों सहित माता के दर्शन के लिए जा रहा था। इतना बड़ा दल देखकर बादशाह के सिपाहियों ने चांदनी चौक दिल्ली में उन्हें रोक लिया और अकबर के दरबार में ले जाकर ध्यानू भक्त को पेश किया।

बादशाह ने पूछा—तुम इतने आदमियों को साथ लेकर कहां जा रहे हो ?

ध्यानू ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया—मैं ज्वाला माई के दर्शन के लिए जा रहा हूं। मेरे साथ जो लोग हैं, वे भी माता के भक्त हैं और यात्रा पर जा रहे हैं।

अकबर ने यह सुनकर कहा—यह ज्वाला माई कौन है ? और वहां जाने से क्या होगा ?

ध्यानू भक्त ने उत्तर दिया—महाराज ! ज्वाला माई संसार की रचना एवं पालन करने वाली माता

हैं। व भक्तों के सच्चे हृदय से की गई प्रार्थनायें स्वीकार करती हैं तथा उसकी सब मनोकामनायें पूर्ण करती हैं। उनका प्रताप ऐसा है कि उनके स्थान पर बिना तेल-बत्ती के ज्योति जलती रहती है। हम लोग प्रतिवर्ष उनके दर्शन करने जाते हैं।

अकबर बादशाह बोले—तुम्हारी ज्वाला माई इतनी ताकतबर हैं इसका यकीन हमें किस तरह आवे ? आखिर आखिर तुम माता के भक्त हो अगर कोई करिश्मा हमें दिखाओ तो हम भी मान लेंगे।

ध्यानू ने नम्रता से उत्तर दिया—श्रीमान ! मैं तो माता का एक तुच्छ सेवक हूं, मैं भला कोई चमत्कार कैसे दिखा सकता हूं।

अकबर ने कहा—अगर तुम्हारी वन्दगी पाक व सच्ची है तो देवी माता जरूर इज्जत रखेगी। अगर वह तुम जैसे भक्तों का ख्याल न रखे तो फिर तुम्हारी इबादत का क्या फायदा है ? या फिर वह देव ही

यकीन के काबिल नहीं, या तुम्हारी इबादत (भक्ति ही झूठी है। इम्तिहान के लिए हम तुम्हारे घोड़े की गर्दन अलग किए देते हैं, तुम अपनी देवी से कहकर उसे दुबारा जिन्दा करवा लेना।

इस प्रकार घोड़े की गरदन काट दी गई।

ध्यानू भक्त ने कोई उपाय न देखकर बादशाह से एक माह की अवधी तक घोड़े के सिर व धड़ सुरक्षित रखने की प्रार्थना की। अकबर ने ध्यानू भक्त की बात मान ली। यात्रा करने की अनुमती भी मिल गई।

बादशाह से विदा होकर ध्यानू भक्त अपने साथियों सहित माता के दरबार में जा उपस्थित हुआ। स्नान पूजन आदि करने के उपरान्त रात भर जागरण किया। प्रातःकाल आरती के समय हाथ जोड़कर ध्यानू ने प्रार्थना की हे मातेश्वरी ! आप अन्तर्यामी हैं। बादशाह मेरी भक्ति की परीक्षा ले रहा है, मेरी लाज रखना, मेरे घोड़े को, अपनी कृपा व शक्ति से जीवित कर देना, चमत्कार प्रकट करना अपने सेवक को कृतार्थ करना। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार न करेंगी तो मैं भी अपना सिर काटकर आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा क्योंकि लज्जित होकर जीने से मर

जाता अधिक अच्छा है। यह मेरी प्रतिज्ञा है आप उत्तर दें—

कुछ समय तक मौन रहा।

कोई उत्तर नहीं मिला।

इसके पश्चात् भक्त ने तलवार से अपना शीश काट कर देवी को भेंट कर दिया।

उसी समय साक्षात् ज्वाला माई प्रकट हुई और ध्यानू भक्त का सिर धड़ से जुड़ गया, भक्त जीवित हो गया। माता ने भक्त से कहा कि दिल्ली में घोड़े का सिर भी धड़ से जुड़ गया है। चिन्ता छोड़कर दिल्ली पहुँचो। लज्जित होने का कारण निवारण हो गया और जो कुछ इच्छा हो वर मांगो—

ध्यानू भक्त ने माता के चरणों में शीश झुकाकर प्रणाम कर निवेदन किया—हे जगदम्बे ? आप सर्व शक्तिमान हैं, हम मनुष्य अज्ञानी हैं, भक्ति की विधि भी नहीं जानते। फिर भी विनती करता हूं कि जग-माता आप अपने भक्तों को इतनी कठिन परीक्षा न लिया करें, प्रत्येक संसारी भक्त आपको शीश भेंट नहीं दे सकता। कृपा करके हे मातेश्वरी ! किसी साधारण भेंट से ही आप अपने भक्तों की मनोकाम-नायें पूर्ण किया करो।

'तथास्तु ! अब से मैं शीश के स्थान पर केवल नारियल की भेंट व सच्चे हृदय से की गई प्रार्थना द्वारा ही मनोकामना पूर्ण करूंगी ।' यह कहकर माता अन्तर्ध्यान हो गई ।

इधर तो यह घटना घटी, उधर दिल्ली में जब मृत घोड़े के सिर व धड़ माता की कृपा से, अपने आप जुड़ गये तो सब दरबारियों सहित बादशाह अकबर आश्चर्य में डूब गए । बादशाह ने कुछ सिपाहियों को ज्वाला जी भेजा । सिपाहियों ने वापिस आकर अकबर को सूचना दी वहां जमीन में से रोशनी की लपटें निकल रही हैं, शायद उन्हीं की ताकत से यह करिश्मा हुआ । अगर आप हुक्म दें तो इन्हें बन्द करवा दें । इस तरह हिन्दुओं की इबादत की जगह ही खत्म हो जायेगी ।

अकबर ने स्वीकृति दे दी । शाही सिपाहियों ने सर्व प्रथम माता की पवित्र ज्योति के ऊपर लोहे के मोटे-मोटे तवे रखवा दिए । परन्तु दिव्य ज्योति तवे फोड़कर ऊपर निकल आई । इसके पश्चात् एक नहर का बहाव उस ओर छोड़ दिया गया । जिससे नहर का पानी निरन्तर ज्योति के ऊपर गिरता रहे फिर भी ज्योति का जलना बन्द न हुआ शाही सिपाहियों

ने अकबर को सूचना दे दी जोतों का जलना बन्द नहीं हो सकता, हमारी सारी कोशिशें नाकाम हो गईं। आप जो मुनासिब हो करें।

इस समाचार को पाकर बादशाह अकबर ने दरबार के विद्वान ब्राह्मणों से परामर्श किया। ब्राह्मणों ने विचार करके कहा कि आप स्वयं जाकर देवी चमत्कार देखें तथा नियमानुसार भेंट आदि चढ़ाकर देवी माता को प्रसन्न करें। बादशाह के लिए दरबार जाने का नियम यह है कि स्वयं अपने कन्धे पर सवा सन सोने का छत्र लादकर नंगे पैरों माता के दरबार में जायें। तत्पश्चात् स्तुति आदि करके माता से क्षमा मांग लें।

अकबर ने ब्राह्मणों की बात मान ली। सवा मन मन पक्का सोने का भव्य छत्र अपने कन्धे पर रखकर नंगे पैरों बादशाह ज्वाला जी पहुंचे। वहां दिव्य ज्योति के दर्शन किए, मस्तक श्रद्धा से झुक गया। अपने पर पश्चाताप होने लगा। सोने का छत्र कंधे से उतार कर रखने का उपक्रम... किया। परन्तु छत्र गिर कर टूट गया। कहा जाता है कि वह सोने का न रहा, किसी विचित्र धातु का बन गया, जो न लोहा था, न पीतल न तांबा न सीसा। अर्थात् देवी ने भेंट

अस्वीकार कर दी ।

इस चमत्कार को देखकर अकबर ने अनेक प्रकार से स्तुति करते हुए कहा माता से क्षमा कीं भीख मांगी और अनेक प्रकार से याता की पूजा आदि करके दिल्ली वापिस लौट आते ही अपने सिपाहियों को सभी भक्तों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने का आदेश निकाल दिया ।

अकबर बादशाह द्वारा चढ़ाया गया खण्डित छत्र माता के दरबार के बांई ओर आज भी पड़ा हुआ देखा जा सकता है ।

॥ बोलो सांचे दरबार की जय ॥

०: .. :०

ज्वाला जी की कथा

जिला होशियार पुर के गोपीपुरा डेरा से लगभग दस मील पर ज्वाला जी का मन्दिर है । यहां पहाड़ में से सदा अग्नि की लपटें निकलती रहती हैं । यह धूमा देवी का स्थान कहलाता है । यह पर सती जी की जिभ्या गिरी थी । इसलिए ५१ शक्ति पाठों में भी इसकी मान्यता है ।

मुगल बादशाह अकबर ने जब ध्यानू भक्त के घोड़े का कटा सिर जुड़ने पर ज्वाला देवी की महत्वता स्वीकार की थी और सवा मन सोने का छत्र लेकर मन्दिर में प्रतिष्ठा करनी चाही तो देवी ने प्रकट होकर छत्र के टुकड़े-२ कर उसे न जाने किस धातु का बना दिया था, इस प्रकार देवी ने अकबर के अहंकार को मिटाया। वह छत्र आज भी इस स्थान पर टुकड़ों के रूप में सुरक्षित पड़ा है।

ज्वाला जी के मन्दिर के पास ही एक पानी का कुण्ड है जिसे सूरज कुण्ड कहते है। यहीं पर लक्ष्मी देवी का मन्दिर, अम्बकेश्बर महादेव, रघुनाथ जी, शीतला, भगवान महावीर, तारादेवी आदि के अनेक अवतारों की मूर्तियां हैं जिसका भक्तजन श्रद्धानुसार बारी से दर्शन करते हैं। यहां के मन्दिर व अन्य स्थानों की यात्रा से व देवी की कृपा से सब कष्ट दूर होकर मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

बाबा जित्तो व झिड़ी स्थान की कथा

प्राचीन काल में जम्मू के समीप धारा नामक गांव में जित्तो नाम का व्यक्ति माता वैष्णों देवी का परम उपासक था। भक्त जित्तो को ही बाबा जित्तो के नाम से भी पुकारा जाता है। जित्तो भक्त के खेत गांव के दश मील की दूरी पर थे। इसलिए वह सुबह ही चला जाता और दिन भर के काम के बाद शाम को ही लौटकर भोजन किया करता था। जिस गांव में वह रहता था। उसमें पानी का अभाव था। जित्तो सभी से प्रेम का व्यवहार करता और किसी को कष्ट नहीं देता था। गांव वाले भी उसकी प्रशंसा करते थे परन्तु उसके कोई सन्तान नहीं थी।

जित्तो की दृढ़ भक्ति को देखकर एक बार वैष्णो देवी ने उसे स्वप्न में दर्शन दिए और वर मांगने को कहा, जित्तो ने कहा कि मैं आपके प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहता हूँ। माता ने इसे स्वीकार करते हुए और कुछ मांगने को कहा। तो भक्त जित्तो ने कहा—हे मातेश्वरी, मेरे कोई सन्तान नहीं है और मेरे गांव में पानी की कमी है अतः यह दोनों अभाव दूर कर दें। माता ने उत्तर दिया—हे भक्त ! तुम अपने घर में

एक झगूड़ा (पालना) लाओ उसमें मेरे स्वरूप जैसी कन्या उत्पन्न होगी। उसी समय तुम्हारे गांव में पानी का झरना फूट पड़ेगा। उस झरने के जल में जो स्नान करेगा उसके सब रोग दूर होंगे। इतना कहकर माता अन्तर्ध्यान हो गई।

दूसरे ही दिन जित्तो पालना ले आया। वह मार्ग-शीर्ष मास की चतुर्दशी का दिन था। उस पालने में दिव्य स्वरूप की कन्या प्रकट हुई। जिस समय कन्या हुई ठीक उसी समय गांव में झरने का जल निकला। पानी की कमी दूर हुई देखकर गांववासी सुखी हो गए। सब लोग मिलकर माता वैष्णों देवी और भक्त जित्तो की जय जयकार करने लगे।

धीरे-धीरे जब कन्या बारह साल की हो गई तो वह अपने पिता को भोजन देने १० मील दूर के खेतों पर जाने लगी। एक बार जब जित्तो के खेत में चावलों की फसल तैयार हुई तो कुछ लुटेरों ने आकर उसे मारा और फसल लूटकर ले गए। उस समय दुःखी होकर जित्तो ने माता वैष्णों देवी को याद किया तो माता सिंह की सवारी पर जित्तो को प्रत्यक्ष दर्शन देकर बोली—हे भक्त ! तुमने मुझे क्यों याद किया है ?

जित्तो को माता के प्रत्यक्ष दर्शन का वरदान पूरा हुआ और उनके चरणों पर गिरकर बोला—माता लुटेरों ने आकर मेरी फसल लूट ली और मुझे मार-पीट कर चले गए। इसी कारण दुःखी होकर आपको याद किया है।

मैं अभी उन लुटेरों को पकड़वाकर तुम जो चाहोगे सो दण्ड दूंगी। माता का स्वर था।

लेकिन भक्त जी ने कहा—उन लुटेरों के कारण ही आज मुझे आपके साक्षात दर्शनों का सौभाग्य मिला है। मैं अब उन्हें किसी प्रकार का दण्ड नहीं दिलवाना चाहता। आप केवल इतना ही करें कि जो लोग मेरे चावलों को खायें वे और उनकी सन्तानें स्वयं ही इस स्थान पर आकर अपने दोष स्वीकार कर लें। ऐसा करने से अन्य लोगों को दुष्कर्म से बचाने की प्रेरणा

यह सुनकर माता ने कहा—जो तू चाहता है वैसा ही होगा और वहां से गायब हो गई और माता की कृपा से पापी लोग भक्त के पास आए और सारे गांव के सामने अपना दोष स्वीकार किया फिर सबने मिल कर माता की प्रार्थना की।

—:०:—

महिमा तेरे द्वार की

तर्ज-मेरी दूरों से आई बारात··· (काला पत्थर)

जय जय करता चलूं मां के द्वार
के दर पे मां के जाऊंगा···

तेरा रूप सलोना मइया मन के मोहे
तेरा द्वार ये सांचा मइया जग में सोह
शेरा वाली मां के चरणों में
लाटां वाली मां के चरणों में
होने लगती मां की जहां जय जयकार
के दर पे मैं तो जाऊंगा···

नाम तेरा इक मइया सुख दाता है
मांगों फल माता से मिल जाता है
जाऊं माता के गले डालूं हार
के दर पे मां के जाऊंगा···

ध्यानूं भगत माता जी दर पे आया
जीवित घोड़ा जिसने मां करवाया

आके उसको दिखाया मां दीदार
के दर पे मां के आऊंगा बिगड़ी बनाऊंगा
'शिवगिरि' मात दुष्टों को तू मारने आ
सबकी देवी मात जग तारन आ
जय बुलाऊंगा, सुख पाऊंगा
लगा ध्यान माता के चरणों में
शीश चरणों में मात के डाल,
ये ज्योत मैं जलाऊंगा
के दर पे मां के जाऊंगा...

—:०:—

मां के जयकारे

तर्ज—सावन के झूले पड़े... (जुरमाना)

माता के दर पे चले
ओ जय जय बुलाये मां शीश झुकावे
माता के दर पे चले...
व्याकुल होय मेरा बिना मां के मन
मां जय जय करूं करूं मैं पूजन
दास ने पुकारा तुम्हें मात द्वार पे

भर दामन आके मेरा माल प्यार से
नाम का प्याला पीऊं तुम से जो मिले
माता के दर पे चले...
जब हम गये मां ने दर्शन दिये थे
शिबगिरि पाप माता ने हर लिये थे
हरा भरा गुलशन वहां फूल थे खिले
माता के दर पे चले...

—:o:—

दुख हरणी मां

तर्जछोटी सी एक भूल ने (शिक्षा)
मेरी जननी देवी मात ने
मुझे दर्शन दिखा दिया दर्शन दिखा दिया
जो इस दर पे आ जाओगे
तो माता है मिल जायेगी
मुझे सच्ची अम्बे मात ने चरणों में लगा लिया
मेरी जननी देवी मात ने...
देवी मां की प्रीत है ये ममता के भण्डार भरे
जगत जनों को पार करे दानव दल निस्तार करे

सुन ले ऐ भंगतां तुझसे कहे मेरा दास
दुख हरणी देवी मात ने दुख मुझसे हटा लिया
मेरी जननी देवी मात ने
ध्यानू इसी ने तार दिया अकबर का
तोड़ा अभिमान
धरा ध्यान जिसने मां का उसको
देती माता ज्ञान
सुन ले तू ऐ भगती आजा मां के पास
ऐ 'शिविगिरि' सदा तू बस मां से प्रीत
लगाता रह
जो भी तुमको कहना है सिर चरणों में
तू डाल के कह
सुनले तू पगले खावे तुझे ना काल
.मेरी जननी देवी मात ने...

—:०:—

सच्ची भक्ति

तर्जःकदर तूने ना जानी... (नूरी)
भगत तूने पहचानी अम्बे मां मां महारानी
काटके तूने शीश चढ़ाया मां ने
तुझको दर्शन दिये थे

बरसा आंखों से पानी भगत तूने पहचानी...
अकबर का मां तूने मान घटाया
सोने का मां छत्र चढ़ाया
बोलो जय जय भवानी भगत तूने पहचानी...
माता जी के दर कर जोड़े
चरण पकड़ 'शिवलाल' निगोड़े
बसी छवि जिसकी सुहानी भगत तूने पहचावी

—:०:—

मां के चरणों में

तर्ज मेरे बस में अगर कुछ... (सांच को आंच नहीं)

दर से आके कुछ ले जाता
जो आके मां के दर्शन अगर कर लेता
लगाता जो तू ध्यान इसी के चरणों में
बनाता तू माता इसी को भवन में
तेरे मन के ये दुख हर लेता
है मां का आके जागा अगर कर लेता
जो आके मां के दर्शन...
कल्याणी है ये मां दुर्गे काली
जिसने सभी की बिगड़ी सम्भाली
मांगी मन की मुरादें तू पाला

जो मां के चरणों में सिर रख देता
दर से आके तू कुछ…
तारा है जब से ध्यानू भगत
तब से इसी मां को पूजे जगत
खाली दामन खुदबखुद भर जाता
जो मां के द्वारे मन को मग्न कर लेता
दर से आके तू कुछ…
'शिवगिरि' सांचा है मां का द्वारा
झूठा है बाकी जगत का पसारा
वाणी अपनी तू रसमय बनाता
जो सब मां को अर्पण कर देना
दर से आके तू कुछ…

—:०:—

मां से मुराद

तर्ज—भीगा भीगा मौसम आया… (भयानक)

माता देवी के दर पे मैं आया
जय मां हुई चहुं ओर
बोल जोर से जय माता की,
आज मचाऊं शोर
माता देवी के दर पे

व्याकुल ये तन मेरा ये मन,
माता को शीश झुकाये
आया हूं मैं आशा ये लेके खाली तू ना लौटाये
मुखड़ा चमके ऐसा मां तेरा ज्यूं चन्दा की कोर
माता देवी के दर पे···
झूठा जगत जंजाल मां किससे प्रीत लगाऊं
जो तार दे मां मुझे चरणों में रोज आऊं
दूर अन्धेरा आके हटा मां होवे रात की भोर
माता देवी के दर पे···

—:०:—

आओ मां के द्वारे

तर्ज—मधुबन खुश्बू देता है··· (साजन बिन सुहागन)
मैया सब सुख देती है
सबके दुख हर लेती है
दर पे उसी का आना है
जो सोये भाग जगाता है जगाता है
भव से जो तरना है तो,
मां देवी के तू दर पे चल
बदल जायेगा तेरा ये दुख से भरा खुशियों में पल
मैया सब सुख देती है···

मांगो यहां सब मिलता है शरण जो मां की
आता है
झोली मां भर देती सबके दुख हर लेती
मैया सब सुख देती है...
देती सवारी पे मां दर्शन भवन
ज्योति द्वार पे मां की जलती रहे
ध्यानू भक्त को तार दिया मां
अकबर का अभिमान हरे
'शिवगिरि' अंखियां मेरी मां दीदार कर लेती है
मैया सब सुख देती है...

—:o:—

चलो जय जय बुलाएं

तर्ज—मेरे पास आओ मेरे दोस्तो (मि० नटवर लाल)

दर पे चलें जयकारा करें चरणों सिर झुकाये
मिल जायेगी माता तुमको भगतो
चलो जय जय बुलायें
दर पे चलें जय जय...
मैया उसके साथ है दर्शन जिसे मिल गये
मैया सिंह पे विराजती है देखो खड्ग लिए
हाथ में
तेज सदा जिसके भाल पे झिलमिला रहा था

नहीं जगमगा रहा था नहीं टिमटिमा रहा थ
दर पे चले जय जय...

अरे ध्यान भी तो धरते रहो
मुझे याद है वो यही है देवी मात
दुखों की है हरनी सुखों की है दात
दर पे चले जय जय...

लगा ध्यान माता का जय जय करता हुआ
पहाड़ों पर चलता था डरता हुआ
बोलो जय दाती की जय बोलो सुख दाती की जय
दर पे चले जय जय...

ध्यानू को जिन्दा जहां किया
अकबर का मान जहां हर लिया
'शिवगिरि' ने मां प्याला तेरा पिया
मां हम भी कुछ पायें
दर पे चले जय जय...

—:०:—

माता द्वारे पर आई

तर्ज–जुल्फ लहराई तो··· (खून का बदला खून)

मात जब आई तो मैं तेरा पावन दर्शन पा गया
भगतों को साथ ले गुणगान तेरा गा गया
आई जो मेरी दुर्गे रानी,
नयनों में था प्यार का पानी

संगता से मैं हार सजा कर
तेरे द्वार पे जय बुलवा कर
चरणों में सिर तेरे झुका गया
मात जब आई तो···

मां जानूं ना मैं तुमको मनाना
और ना जानूं मां ध्यान लगाना
मात तेरे दर पे आके चरणों में तेरे
शीश झुकाके
'शिवगिरि' सदा मुस्करा गया
माता जब आई तो···

———

मां के दर्शन

तर्ज–ज़िन्दगी के हर मोड़ पे… (झूठा कहीं का)

माता के इस द्वार पे खिल जायेंगे गुल उधर
आके तू भी देख ले भगतां मां होगी जिधर
माता के इस द्वारे पे…

ये वही माता है जिसको ढूंढें तेरी निगाहैं
दर्शन करने से हो जायेगी दिल की पूरी चाहैं
गा के सुनायेंगे हम भेटें मैया जी के दर
माता के इस द्वार पे…

बीच गुफा के है मां 'शिवगिरि' प्यारी
करती है जो नित्त शेर सवारी
दर पे तेरी माता जय जय बुलाता
दास खड़ें मां बनके भिखारी इधर
मैया से मुंह मोड़ के बचके जायेगा किधर
आके तू भी देख ले भगतां मां होगी उधर
माता के इस दर पे…

—:०:—

सच्चा दरबार

तर्ज–आदकी मुसाफिर है... (अपनापन)

मां सांचा तेरा द्वार है जो भव से तराता है
भूले भटके राही को ये राह दिखाता है
मां सांचा तेरा द्वार...
द्वारे पे आओ जय जय बुलाने
भगतों मैया जी के दर्शन को पाने
मांगा फल मां से मिल जाता है
मां सांचा तेरा द्वारा...
शीश चढ़ाया ध्यान ने मां को
अमर किया था माता ने जिसको
दर पे तेरा नूर खिल जाता है
मां सांचा तेरा द्वारा...
मां ही नैया मां ही है खिवैया
जय बोलो मन से जगदम्बे मइया
चरणों में माता के जो गिर जाता है
'शिवगिरि तभी मुक्ति पा जाता है
मां सांचा तेरा द्वार...

—:o:—

पावन ज्योति

तर्ज–सोना रे तुझे कैसे मिलूं…

मइया री तेरे दर चलूं जयकारा करूं
माता हो
आजा ओ जगदम्बे री तेरा ध्यान धरूं
माता हो
मइया री तेरे दर पे…
चलता सिंह नदी के तीरे
क्यूं ना मैं आके दर्शन करूं तेरा ध्यान धरूं
मेहर गरीबों पे तू करती
आकर मां तू झोली भरती
माता हूं जब पुत्र तेरा फिर काहे डरूं माता हो
मइया री तेरे दर पे…
बीच भवन में जब जलती है
पावन तेरी ज्योत सुहानी
सारो जन के काज तू आकर
मेरी ओ अम्बे महारानी
चाह यही 'शिवलाल' मां के चरणों में मरूं
माता हो
मइया री तेरे दर पे…

भक्त की पुकार

तर्ज–छैला बाबू तू कैसा··· (कर्त्तव्य)

ज्वाला माई तू सिंह पे सवार निकली
मेरे मुख से तेरी जय जयकार निकली
आगे हों हनुमान लंगुरिया पीछे भैरों वीर
सिंह पीठ पे चढ़ी भवानी आओ नदी के तीर
आश दिल से यही मां हर बार निकली
मेरे मुख से तेरी जय जयकार···

या गोदी में गणपति जी हों और शिवजी हों संग
ऐसा आके दर्श दिखा मां मन में उठे उमंग
भरती भक्तों की झोली तू हर बार निकली
मेरे मुख से तेरी जय जयकार···

ध्यानू भगत का दर्शन होवे तुझको शीश चढ़ाते
और तेरा दीदार होवे सबसे प्यार बढ़ाते
करती तू दुष्ट दल का माँ संहार निकली
मेरे तू दुष्ट दल का मां संहार निकला

मेरे मुख से तेरी जय जयकार···

कहे 'शिवलाल' शरण जो भी इसको शीश झुकाता
माता के दर आके भव से नइया पार कराता
करती भक्तों का मां तू उद्धार करती निकली
मेरे मुख से तेरी जय जयकार...

दर्शन हो जावे बस मुझको हे जगदम्बे रानी
मीठे स्वर में आज विनय करता हूं मात भवानी
तेरे 'शिवगिरि' के नयनों से जल की धार निकली
मेरे मुख से तेरी जय जयकार...

दाती के द्वारे

तर्ज—ऐ मेरा दिल प्यार का दीवाना (डान)
ऐ दर ते संगता चल पइयां

चल पइयां दर दर ते संगता चल पइयां
दाती दे दर संगता चल पइयां
तारा देवे नीं तुसी देवी मइया

पार लगावांगी मात तेरी नइया
जय मां अम्बे दी संगता कर मइयां
चल पइयां दर ते संगता…

जेड़े दाती ते द्वार दे विच आवांगे
पापां दे बन्धन भव से कट जावांगे
जय मां दी कर लै तार देवी तेरी नइया
चल पइयां दर ते संगता…

भैरवा मां तैनूं चंबर ढुलावां सी
ध्यानू मठ दे विच तैनूं शीश चढ़ावां सी
मैंनूं जना दी तुसी है लाज मां बचयां
चल पइयां दर ते संगता…

अकबर ने मां तुसी जदों भुलाया था
अहंकार दे बिच आ नाश कराया था
'शिवलाल' मां दी भेंट भक्त नूं दे जइयां
चल पइयां दर ते संगता…

ꣻꣻ

श्री नवरात्र व्रत कथा

व्रत की विधि

इस व्रत में उपवास या फलाहार आदि का कोई विशेष नियम नहीं है। प्रातः उठकर स्नान करके मंदिर में जाकर या घर पर ही नवरात्रों में दुर्गाजी का ध्यान व्रत रखना चाहिए। कन्याओं के लिए यह विशेष फल दायक है। श्री जगदम्बा की कृपा से सब विघ्न दूर होते हैं। कथा के अन्त में बारंबार 'दुर्गा माता तेरी सदा ही जय' का उच्चारण करें।

कथा प्रारम्भ

बृहस्पति जी बोले-हे ब्राह्मण! आप अत्यन्त बुद्धिमान, सर्वशास्त्र और चारों वेदों को जानने वालों में श्रेष्ठ हो। हे प्रभु? कृपाकर मेरा वचन सुनो। चैत्र, अश्विन माघ और आषाढ़ के शुल्कपक्ष में नवरात्र का व्रत और उत्सव क्यों किया जाता है? हे! भगवान इस व्रत का फल क्या है ? किस प्रकार करना उचित है

ओर पहले इस व्रत को किसने किया सविस्तार कहो? बृसस्पति जी का ऐसा वचन सुनकर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे वृहस्पते ! प्राणियों का हित करने की इच्छा से तुमने बहुत अच्छा प्रश्त किया। जो मनुष्य मनोरथपूर्ण करनेवाली दुर्गा, महादेव, सूर्य और नारायण का ध्यान करते हैं वे मनुष्य धन्य है। यह नवरात्र व्रत संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने बाला है इसके करने से पुत्र चाहने वालों को पुत्र, धन चाहने वालों को धन, विद्या चाहने वालों को विद्या और सुख चाहने वालों को सुख मिल सकता है। इस व्रत के करने से रोगी मनुष्य का रोग दूर हो जाता है और कारागार में बंद हुआ मनुष्य बंधन से छूट जाता है, मनुष्य की तमाम आपत्तियां दूर हो जातीं हैं और उसके घर में संपूर्ण संपत्तियां आकर उपस्थित हो जाती हैं। वंध्या और काक बंध्या के इस व्रत के करने से पुत्र पैदा हो जाता है। समस्त पापों को दूर करने वाले इस व्रत के करने से ऐसा कौनसा मनोरथ है जो सिद्ध नहीं हो सकता। जो प्राणी इस अलभ्य मनुष्य देह को पाकर भी नवरात्र का व्रत नहीं करता

है वह माता और पिता से हीन हो जाता अर्थात् उस के माता पिता मर जाते और उनके अनेक दुखो को भोगता है। उसके शरीर में कुष्ठ हो जाता है और अंगहीन हो जाता है, उसके संतानोत्पत्ति नहीं होती। इस प्रकार वह मूर्ख अनेक दुख भोगता है। इस व्रत को न करने वाला निर्दयी मनुष्य धन और धान्य से रहित होकर भूख और प्यास के मारे पृथ्वी पर घूमता फिरता है और गूँगा हो जाता है। जो सधवा स्त्री भूल से इस व्रत को नहीं करती वह पतिहीन होकर नाना दुःखों को भोगती हैं। यदि व्रत करनेवाला मनुष्य सारे दिन उपवास न कर सके तो एक समय भोजन करे व उस दिन बांधवों सहित नवरात्र व्रत कथा का श्रवण करे। हे बृहस्पतु! जिसने पहले इस महाव्रत को किया उसका पवित्र इतिहास मैं तुम्हें सुनाता हूँ। तुम सावधान होकर सुनो। इस प्रकार ब्रह्माजी का वचन सुन कर बृहस्पति बोले हे ब्राह्मण ! मनुष्यों का कल्याण करने वाले इस व्रत के इतिहास मेरे लिए कहो मैं सावधान होकर सुन रहा हूँ। आपकी शरण आये हुए मुझ

पर कृपा करो । ब्रह्मा जी बोले—पीठत नामक मनो-
हर नगर में एक अनाथ नाम का ब्राह्मण रहता था ।
उसके संपूर्ण सद्गुणों से युक्त मानो ब्रह्मा की सबसे
पहलो रचना हो ऐसी यथार्थ नाम वाली सुमति नाम
की एक अत्यन्त सुन्दरी पुत्री पैदा हुई । वह कन्या
सुमति अपने पिता के घर बालकपन में अपनी सहे-
लियों के साथ क्रीड़ा करती हुई इस प्रकार बढ़ने लगी
कि जैसे शुक्लपक्ष की कला बढ़ती है उसका पिता
प्रतिदिन जब दुर्गा की पूजा और होम किया करता
था उस समय वह भी नियम से वहां उपस्थित होती
थी । एक दिन सुमति अपनी सखियों के साथ खेलने में
लग गई और भगवनी के पूजन में उपस्थित नहीं हुई
उसके पिता को ऐसी असावधानी देखकर क्रोध आया
और पुत्री से कहने लगा कि हे दुष्ट पुत्री ! आज
प्रभात से तूने भगवती का पूजन नहीं किया । इस
कारण मैं किसी कुष्ठी और दरिद्री मनुष्य के साथ
तेरा विवाह करूंगा । इस प्रकार कुपित पिता का
वह वचन सुनकर सुमति को बड़ा दुःख हुआ

पिता से कहने लगी—हे पिता जी ! मैं आपकी कन्या हूं। मैं आपके सब तरह से आधीन हूं। जैसी आपकी इच्छा हो मेरा विवाह कर सकते हो पर होगा वो ही जो मेरे भाग्य में लिखा है मेरा तो इस पर पूर्ण विश्वास हैं। मनुष्या न जाने कितने मनोरथ का चिन्तन करता है पर होता वही है जो भाग्य में विधाता ने लिखा है। जो जैसा कार्य करता है, उसको फल भी उसी कर्म के अनुसार ही मिलता है, क्योंकि कर्म करना मनुष्य के अधीन है पर फल देव के अधीन है। जैसे अग्नि में पड़े हुए तृनादि उसको अधिक प्रदीप्त कर देते हैं उसी प्रकार अपनी कन्या के ऐसे निर्भयता से कहे हुए वचन सुनकर उस ब्राह्मण को और अधिक क्रोध आया। तब उसने अपनी कन्या का एक कुष्ठी के साथ विवाह कर दिया और अत्यन्त क्रुद्ध होकर पुत्री से कहने लगा जाओ २ जल्दी जाओ अपने कर्म का फल भोगो। देखें भला भाग्य के भरोसे रहकर क्या करती है। इस प्रकार से कहे हुए पिता के कटु वचनों को सुनकर सुमति मन में विचार करने लगी

कि—अहो मेरा बड़ा दुर्भाग्य है जिससे मुझे ऐसा पति मिला। इस तरह अपने दुख का विचार करती हुई वह सुमति अपने पति के साथ वन में चली गई और भयावने कुशा युक्त उस स्थान पर उन्होंने वह रात बड़े कष्ट से व्यतीत की उस गरीब बालिका की ऐसी दशा देखकर भगवती पूर्व पुण्य के प्रभाव से प्रकट होकर सुमति से कहने लगी कि हे दीन ब्राह्मणी ! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ तुम जो चाहो सो वरदान मांग सकती हो। मैं प्रसन्न होने पर मन वांछित फल देने वाली हूँ। इस प्रकार भगवती दुर्गा का वचन सुनकर ब्राह्मणी कहने लगी कि आप कौन हो जो मुझ पर प्रसन्न हुई हो, यह सब मेरे लिए कहो और अपनी कृपा दृष्टि से मुझ दीन दासी को कृतार्थ करो। ऐसा ब्राह्मणी का वचन सुनकर देवी कहने लगी कि में आदि शक्ति हूँ और मैं ही ब्रह्मविद्या और सरस्वती हूँ। मैं प्रसन्न होने पर प्राणियों का दुख दूर कर उनको सुख प्रदान करती हूँ। हे ब्राह्मणी ! मैं तुझ पर तेरे पूर्व जन्म के पुन्य के प्रताप से प्रसन्न हूँ। तुम्हारे पूर्व जन्म का वृतान्त सुनाती हूँ सुनो ! तू पूर्व जन्म में निषाद (भील) की स्त्री थी और अति

पतिव्रता थी । एक दिन तेरे पति निषाद ने चोरी की । चोरी करने के कारण तुम दोनों को को सिपाहियों ने पकड़ लिया और ले जाकर जेल खाने में कैद कर दिया । उन लोगों ने तेरे को और तेरे पति को भोजन भी नहीं दिया । इस प्रकार नवरात्र के दिनों में तुमने न तो कुछ खाया और न जल ही पिया । इसलिए नौ दिन तक नवरात्र का व्रत हो गया । हे ब्राह्मणी उन नौ दिनों में जो व्रत हुआ उस व्रत के प्रभाव से प्रसन्न होकर तुम्हें मनोवांछित वस्तु दे रही हूं । तुम्हारी जो इच्छा हो सो मांगो । इस प्रकार दुर्गा के कहे हुए वचन सुनकर ब्राह्मणी बोली कि अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो हे दुर्गे ! मैं आपको प्रणाम करती हूँ । कृपा कर मेरे पति के कोढ़ को दूर करो । देवी कहने लगी उन दिनों में जो तुमने व्रत किया तो उस व्रत के एक दिन का पुण्य तुम्हारे पति का कोढ़ दूर करने को अर्पण करो । मेरे प्रभाव से तेरा पति कोढ़ से रहित और सोने के समान शरीर वाला हो जाएगा । ब्रह्माजो बोले कि इस प्रकार देवी के वचन सुनकर वह ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई और पति को

निरोग करने की इच्छा से ठीक है, ऐसे बोली। तब उसके पति का शरीर भगवती दुर्गा की कृपा से कुष्ठ-हीन होकर अति कान्ति युक्त हो गया। जिसकी कांति के सामने चन्द्रमा की कान्ति भी क्षीण हो जाती है। वह ब्राह्मणी पति की मनोहर देह को देखकर देवी को अति पराक्रम वाली समझ कर स्तुति करने लगी–हे दुर्गे ! आप दुर्गति को दूर करने वाली, तीनों जगत का संताप हरने वाली, समस्त दुखों को दूर करने वाली, रोगी मनुष्य को निरोग करने वाली, प्रसन्न होने पर मनवांछित वस्तू देने वाली और दुष्ट मनुष्यों का नाश करने वाली हो। तुम ही सारे जगत की माता और पिता हो। तुम ही सारे जगत की माता और पिता हो। हे अम्बे ! मुझ अपराध रहित अबला को मेरे पिता ने कुष्ठी मनुष्य के साथ विवाह कर मुझे घर से निकाल दिया उनकी निकाली हुई पृथ्वी पर घूमने लगी। आपने ही मेरा इस आपत्ति रूपी समुद्र से उद्धार किया है हे देवी ! मैं आपको

दीन की रक्षा करो। ब्रह्मा जी बोले कि हे बृहस्पते ! इसी प्रकार उस सुमति ने मन से देवी की बहुत स्तुति की और उसके द्वारा की हुई स्तुति को सुनकर सुमति पर देवी को बहुत संतोष हुआ और ब्राह्मणी से कहने लगी हे ब्राह्मणा। तेरे उद्दालक नाम का अति बुद्धिमान, धन बान, कीर्तिमान और जितेन्द्रिय पुत्र शीघ्र ही होगा। ऐसे कहकर वह देवी उस ब्राह्मणी से फिर कहने लगी कि हे ब्राह्मणी ?और जो कुंछ तेरी इच्छा हो वहां मन वांछित वस्तु मांग सकती है. ऐसा भवानी दुर्गा का वचन सुन सुमति बोली कि हे दुर्गे ! अगर आप मेरे पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे नवरात्र व्रत करने से आप प्रसन्न होती हैं उस विधि को और उसके फल को मेरे से विस्तार से वर्णन करें। इस प्रकार ब्राह्मणी के कहे वचन सुनकर दुर्गा कहने लगी कि हे ब्राह्मणी ! मैं तुम्हारे लिए सम्पूर्ण पापों

को दूर करने वाली नवरात्र विधि को बतलाती हूं जिसको सुनने से तमाम पापों से छुटकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है। आश्विन मास के शुक्लपक्ष की प्रति पदा से लेकर नौ दिन तक विधि पूर्वक व्रत करे यदि दिन भर का व्रत न कर सके तो एक समय भोजन करे . पढ़े लिखे ब्राह्मणों से पूछ कर घट स्थापना और वाटिका बनाकर उसको प्रतिदिन जल से सींचे . महाकाली, महालक्ष्मी और महा सरस्वती इनकी मूर्तियां बनाकर उसको नित्य विधि सहित पूजा करें और पुष्पों मे विधि पूर्व अर्घ्य दें। बिजौरा के फूल से अर्घ्य देने के रूप की प्राप्ति होती है और जायफल से कीर्ति और दाख से कार्य की सिद्ध होती है।

आंवले से सुख और केले से भूषण की प्राप्ति होती है . इस प्रकार फलों से अर्घ्य देकर यथा विधि हवन करे, . खांड, घी, गेहूं, शहद, जो, तिल, बिल्व नारियल, दाख और कदम्ब इनसे हवन करें . गेहूँ से होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है . खीर से

चम्पा के पुष्पों से धन और पत्तों से तेज और सुख की प्राप्ति होती है आवले से कीर्ति और केले से पुत्र प्राप्त होय . कमल से राज सम्मान और दाखों से सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है खाँड, घी नारियल, शहद जौ और तिल इनसे तथा फलों से होम करने से मनवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है . व्रत करने वाला मनुष्य इस विधान से होम कर आचार्य को अत्यन्त नम्रता के साथ प्रणाम करें और यज्ञ की विधि के लिए उसे दक्षिणा दें . इस महाव्रत को पहले बताई हुई विधि के अनुसार जो कोई करता है उसके सब मनोरथ हो जाते हैं . इसमें तनिक भी संशय नहीं है इन नो दिनों में जो कुछ दान आदि दिया जाता है, उसका करोड़ों गुना फल मिलता है इस नवरात्र के व्रत करने से ही अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है . हे ब्राह्मणी ! इस सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले उत्तम व्रत को तीर्थ, मंदिर अथया घर में ही विधि

के अनुसार करें . ब्रह्मा जी बोले कि–हे बृहस्पते ! इस प्रकार ब्राह्मणी को व्रत की विधि और फल बताकर देवी अंतर्ध्यान हो गई . जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को भक्ति पूर्वक करता है वह इस लोक में सुख पाकर अन्त में दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होता है हे बृहस्पते ! यह दुर्लभ व्रत का महात्म्य मैंने तुम्हारे लिए बतलाया है . ऐसे ब्रह्मा जी के वचन सुनकर बृहस्पति जी आनन्द के कारण रोमांचित हो गए और ब्रह्मा जी से कहने लगे कि ब्रह्मन ! आपने मुझ पर अति कृपा की जो अमृत के समान इस नवरात्र व्रत का महात्म्य सुनाया हे प्रभो ! आपके बिना कौन इस महात्म्य को सुना सकता है ? ऐसे बृहस्पति जी के वचन सुनकर ब्रह्मा जी बोले कि हे बृहस्पते ! तुमने सब प्राणियों को हित करने वाले इस अलौकिक व्रत को पूछा इसलिए तुम धन्य हो। इह भगवती शक्ति सम्पूर्ण लोकों की पालन करने वाली है, इस महादेवी के प्रभाव को कौन जान सकता है।

श्री दुर्गा अष्टमी का व्रत

विधि—यह त्योहार अश्विन शुक्लपक्ष अष्टमी को आता है। इस दिन दुर्गा देवी की पूजा की जाती है। भगवती दुर्गा को उबाले हुए चने, हलुआ पूड़ी, खीर, पूआ आदि का भोग लगाया जाता है। बहुत से व्य. क्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के लिए हवन आदि भी करते हैं। जहां शक्ति को अधिक मान्यता दी जाती है वहां बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कन्या लांगुरा जिमाये . देवी जी की जोत करे .

कथा...हिन्दुओं के प्राचीन शास्त्रों के अनुसार दुर्गा देवी नौ रूपों में प्रकट हुइ हैं। उन सब रूपों की पृथक-२ कथा हैं—

दुर्गा चालीसा प्रारम्भ

नमो नमो दुर्गे सुख करनी । नमो नमो अम्बे दुख हरनी । निराकार है ज्योति तुम्हारी । तिहूँ लोक फैली उजयारी . शशि लिलार मुख महा विशाला . नेत्र लाल भृकुटी विकराल . रूप मातु का अधिक सुहावे . दरस करत जन अति सुख पावे . सर्ब संसार शक्तिमय कीना . पालन हेतु अन्न धन दीना . अन्न-पूर्णा हुई जगपाला . तुमही आदि सुन्दरी बाला . प्रलय काल सब नाशन हारी . तुम गौरी शिवशंकर प्यारी . शिवयोगी तुम्हारे गुण पावे . ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावे . रुप सरस्वती का तुम धारा . दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा . धरयो रुप नरसिंह को अम्बा . प्रकट भई फाड़कर खम्बा . रक्षा करि प्रहलाद बचायो . हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो , लक्ष्मी रुप धरयो जग माहीं . श्री नारायण अंग समाहीं . क्षीर सिंधु में करत

बिलासा . दया सिंधु कीजै मन आशा . हिंगलाज में तुम्हीं भवानी . महिमा अमित न जात बखानी . मातंगी धुमावति माता . भुवनेश्वरी बगला सुख दाता . श्री भैरव माता जगतारणि . . छिन्न भाल भाव दुख-निवारणि . केसरि वाहन सोह भवानी . लंगूर वी . चलत अगवानीं . कर मैं खप्पर खड्ग विराजे . जाको देखिकाल डर भागे . सोहै जस्त्र और त्रिशूला . जाते उठत शत्रु हिय शूला . लव कोटि में तुम्ही विराजत . तिहुँ लोक में डंका बाजत . शुम्भ निशुम्भ दनुज तुम मारे . रक्त बीज शंखन संहारे महिषापुर नृप अति अभिमानी . जेहि अर्घमार मही अकुलानी . रूप कराल कालिका धाला . सेन सहित तुम तिनहि सहारा . परी गाढ़ सन्तन पर जब जब . भई सहात मातु तुम तब तब . अमरपुरी औरहु सब लीका . तब महिमा सब रहे अशोका . ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी तुम्हें सदा पूजे नरनारी . प्रेम भक्ति से जो यश गावै दुखदरिद्र निकट नही आवै . ध्यावै तुम्हें जो नर लाई

जन्म मरण से सो छुटि जाई . ओशी सुर मुनि कहत पुकारी . योग नही बिन शक्ति तुम्हारी . तप शंकराचार्य अति कीन्हा . काम क्रोध पढरिपु जीत लीन्हा . निश दिन ध्यान धरो शंकर को . काहूं काल नहिं सुमिरो तुमको । शक्तिरुप का मरम न पायो . शक्ति गई तब तब मन पछतायो . शरणागत होई कीर्ति बखानी . जय जय जय जगदम्ब भवानी . भई प्रसन्न आदि जगदम्बा दई शक्ति नहिं कीन विलम्बा . मोको मातु कष्ट अति घेरो . तुम बिन कौन हरे दुख मेरो . आशा तृष्णा निपट सतावे . मोह महादिक सब विनशावे . शत्रु नाश कीजै महारानी . सुमिरों एकहि तुम्हें भवानी . करो कृपा हो मातु दयाला . ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला जब लगि जियो दया फल पाऊं . तुम्हरो यश मैं सदा सुनाऊं . दुर्गा चालिसा जो नर गावै सब सुख भोग परम पद पावै . 'देवीदास' शरण निज जानी . करहु कृपा जगदम्ब भवानी ॥

आरती संग्रह

आरती श्री वैष्णव देवी जी की

सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी,
तेरा पार न पाया
पान सुपारी ध्वजा नारियल
ले तेरी भेंट चढ़ाया ।।
सुआ चोली तेरे अंग विराजे,
केसर तिलक लगाया ।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे,
शंकर ध्यान लगाया ।।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी...
राजा भैरो चंवर ढुलावे,
लंगूर वीर का पहरा ।
ऊँचे पर्वत भवन है माँ का,
झंडा लाल सुनहरा ।।
सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी...
सुन्दर गुफा है मात तुम्हारी,
शीश पे छत्र विराजे ।
गंगा बहे चरणों में,
मधुर घंटा ध्वनि बाजे ।
सुन मेरी देवी पर्वत वासिनी...

देवी के मंदिर में की जाने वाली स्तुति

कैसी यह देर लगाई है दुर्गे,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।
भव सागर में गिर पड़ा हूं,
काम आदि में घिरा पड़ा हूं ।
मोह आदि जाल में जकड़ा पड़ा हूं,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।
न मुझमें बल न मुझमें विद्या,
न मुझमें भक्ति न मुझमें शक्ति ।
शरन तुम्हारी गिर पड़ा ,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।
न कोई मेरा कुटुम्ब साथी,
न ही मेरा शरीर साथी ।
चरण कमल को नौका बनाकर,
मैं पार हूंगा खुशी मनाकर ।
यमदूतों को मार भगाकर,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।
आप ही उबारो पकड़ के बाहीं,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।
सदा ही तेरे गुणों को गाऊं,
सदा ही तेरे स्वरूप को ध्याऊं ।
नितप्रति तेरे गुणों को गाऊं,
हे मात मेरी हे मात मेरी ।

श्री दुर्गा जी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया, जय मंगल मूर्ति गौरी ।
जय आनन्द करिणि तुमको निशदिन,
ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी ।। टेक
मांग सिंदूर विराजत टीको मृग मद को ।
उज्जवल से दोऊ नैना चन्द्र बदन नीको ।। जय०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे ।
रक्त पुष्प गल माला कंठन पर साजे ।। जय०
केहरि वाहन राजत खड़ग खप्पर धारी ।
सुर-नर-मुनि जन सेवत तिनके दुःखहारी ।। जय०
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती ।
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ।। जय०
शुम्भ निशुम्भ बिडारे महिषासुर घाती ।
धूम्र विलोचन नैना निशदिन मदमाती ।। जय०
चंड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे ।
मधु कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे । जय० ।
तुम ब्रह्माणी तुम रुद्राणी, तुम कमला रानी ।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ।। जय०

चौंसठ योगिनी मंगल गावत नृत्य करत भैंरू ।
बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ।। जय०

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता ।
भक्तन की दुख हरता, सुख संपति करना ।। जय०
भुजा चार अति शोभित खड्ग खप्पर धारी ।
मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ।। जय०
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ।
श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।। जय०
यह अम्बे की आरती जो कोई नर गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख-संपत्ति पावे ।। जय०

आरती गणेश जी की

जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जा की पार्वती पिता महादेवा ।।

लड्डूअन का भोग लागे सन्त करे सेवा ।।जय गणेश०
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक सिंदूर सोहे मूसे की सवारी ।।जय गणेश०

अन्धन को आंख देत कोढ़िन को काया ।
बांझ को पुत्र देत निर्धन को माया ।। जय गणेश०
हार चढें फूल चढ़ें और चढ़े मेना ।
सूरदास शरण आयो सफल कीजे सेवा ।। जय गणेश०
दीनन की लाज राखो शम्भु सुत वारी ।
कामना को पूरा करो जग बलिहारी । जय गणेश०

आरती श्री लक्ष्मी जी की

जय लक्ष्मी माता, जय लक्ष्मीं माता ।
उमा रमा ब्राह्मणीं तुम हो जग माता ।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता । जय०
दुर्गा रूप निरंजन सुख सम्पति दाता ।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि पाता । जय
तू ही पाताल बसन्ती तू ही है शुभ दाता ।
कर्म प्रभाव प्रकाशक भवनिधि की त्राता ।
जिस घर थारो वासो तेहि मैं गुण आता ।
कर न सके सोई करले मन नही घड़काता जय०

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्त्र न होय राता ।
खान पान को वैभव तुम बिन को दाता ।।जय०
शुभ गुण सुन्दर मन्दिर क्षीरनिधि जाता ।
रत्न चतुर्दश ताको कोई नहीं पाता ।। जय०
ये आरती लक्ष्मी जी की जो कोई नर गाता ।
उर आनन्द समाता पाप उतर जाता ।।जय०
स्थिर चर जगत रचाये शुभ कर्म नर लाता ।
राम प्रताप माता की शुभ दृष्टि चाहता ।।जय०

आरती नर्मदा जी की

जय जगदम्बा जय नर्मदा भवानी ।
निकसी जल धार जोर पर्वत पाताल फोर
छटा छवि आनन्द वरन कवि सुर फनिन्न ।
काटत जम द्वन्द्व फंद देत रजधानी ।।
भूषण वस्त्र शुभ विशाल वन्दन की खोर ।
भाल मनो राव पर्वकाल तेज औ बखानी ।
दे मुक्ति परमधाम पावत जो आठों याम ।
दुविधा जात महाकाम ध्यावत जो प्राणी ।
ध्यावत अज सुर सुरेश पावत नहीं पार ।
गावत नारद गणेश पंडित मुनि ज्ञानी ।।

समय सागर मझदार में जब उदधि अहंकारी।
उदर फार धार निकार ऊपर नित छहरानी।
अष्ट भुजा बाल अखण्ड नव द्वीप।
नौ खण्ड महिमा मात तुम जानी।
देके दर्शन प्रसाद रखो माता मर्जाद।
दास गंग करे आरती, वेद मति बखानी।
जय सन्तोषी माता जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन की सुख संपति दाता। जय०
सुन्दर चीर सुनहरो मां धारण कीन्हो।
हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हो। जय०
गुरु लाल चटा छवि बदन बदन कमल काहैं।
मंद हंसत करु[illegible] त्रिभुवन मन मोहै। जय०
स्वर्ण सिंहासन बैठी चंवर ढुरे प्यारे।
धूप दीप मधु मेवा भोग धरे न्यारे। जय०
गुण और चना परमप्रिय तामे सन्तोष कियो।
सन्तोषी कहलाई भक्तन विभव दियो। जय०
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत मोही। जय०
मन्दिर जगमग ज्योति मगल ध्वनि छाई।
वनिय करें हम बालक चरनन सिर नाई। जय०

भक्ति भाव मय पूजा अंगीकृत कीजे।
जो मन बसे हमारे इच्छा फल दीजे। जय०
दुःखी दरिद्री रागी संकट मुक्त किए।
बहु धन धान्य घर सुख सौभाग्य दिए। जय०
ध्यान हरो जाने तेतो मनवांजित फल पायो।
पूजा कथा श्रवण कर घर आनंद आयो। जय०
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे।
संकट तू ही नियारे दयामयी अम्बे। जय०
संतोषी मां की आरती जो कोई जन गावे।
ऋद्धि सिद्धि सुख सम्पति जी भरके पावे। जय
ओम जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट क्षण में दूर करे। ओम०
जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मनका।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का। ओ०
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी। ओ०
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी। ओम०
तुम करुणा के सागर, तुम पालन करता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता। ओम०

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति ।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ।ओ०
दीरबन्धु दुख हर्त्ता, तुम रक्षक मेरे,
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ।ओम०
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।

आरती माता वैष्णव देवी की

जय वष्णवी माता मैया जय जय वैष्णवी माता ।
द्वार तुम्हारे जो भी आया बिन मांगे सब कुछ पा जाता
तू चाहे जो भी करदे, तू चाहे तो जीवन दे दे ।
राजा रंक बने तेरे चेले, चाहे पल में जीवन ले ले ।।
मौत जिन्दगी हाथ में तेरे, मैया तू है लाटा वाली ।
पापी होय या होय पुजारी, राजा हो या रंक भिखारी
मैया तू हे जोता वाली, भवसागर से तारन हारी ।।
तूने नाता जोड़ा सबसे जिस जिसने जब तुझे पुकारा
शुद्ध हृदय से ध्याया, दिया हैं तूने सबको सहारा ।।
मैं मूरख अज्ञानी अनारी, तू जगदम्बे सबकी प्यारी ।
मन इच्छा सिद्ध करने हारी, अब है 'बृजमोहन' की बारी

शिवजी का विवाह

पार्वती दे बुए अगे शिवां नें बिगुल सजाया
गोरां दा नी देखो लाड़ा चढ़ बैल ते आया
केड़ा ऐ जाञ्जी केड़ा ऐ लाड़ा

सारेयां ने ढोल वागूं ढिड लमकाये ने
मड़िया दे भूत बी बराती बन आए ने

मड़िया दे भूत बी बराती बन आए ने
गोरां तेरी किस्मत खोटी

ऊंट दे गल बिच पायां मोती
नारद मुनि बिचोला बणके बुड्ढा पल्ले पाया
गौरा दा नी देखो…

बांटे दे बांटा शंभु दंभ दा चढ़ावे
देखो इस बाबे ने मखौल का बनायां ए

भंगा दिया बोरियां वी ताल लेके आया ए
अंग भभूती रमाई ए मृगछाला वी पाई होई ए
कान में कुण्डल भालां इसका सबसे रूप निराला
गौरां दा नी देखो…

आओ न सहेल ।चल चल गौरा नु कहिए
सुनती गौरां अड़िए तेरा होय मन्द हाल नी
राजे दा जवा सानु जचदा कंगाल नी
बैल ते बैठा काला कलूटा
मोटा सोटा करके दीवाना
उपापति दा भेद किसे न पाया

—।०।—

गौरां दा विवाह

तर्ज—बाबा के कला मरोड़... (लोक गीत)

गौरां दां कह जा कौल गल सुन नी कन्त तू बोल
गोरा रानी तेरा बुड्ढा लाडा
गिठ गिठ लम्बा जिसदा दाढ़ा
जांजी अजीब लिआया
घोड़ी दी थां बैल चढ़ आया
नीना बाजा ठोल गोरां नी बह जा कोल
ओहबे गल विच सर्प लटकाए
कन्वां विक्ष बिच्छू पाए

तन नंगे एक लंगोट भंगां दे लग घोते
पी भंग होय मस्त वलंग ओहदे मोटे २ अंग
नी तू केहड़ी सोहल
गौर नी बैह जा कौल…

ओहदे नाल जो जांजी आए
सत्त मन्द दे भूखे तिहाए

पिंडे ते मयी यली भभूत जापन मढ़ीया दे भूत
पंच कोठे खान बनवाए उहना नै घड़ बिच तुकए

नी सब संग कर गए गोल
गौरा नी बैह जा कौल…

बद किस्मत दा नतीजा बुड्ढा बनाय जीजा
दस किहनुं हाल सुनाइए गौरा तैनुं समझाए

असी ता वेख वाख अइयां
महेश ने धूपि ताइयां
नी दिल जांदा डोल
गौरा बैंह जा कौल…

माता दे टप्पे

मैया शेरां बालिए २
भक्ता नूं दर्शन देवे दुष्टा नू मार दी ए
दर तेरे मां आए सां २
दर्श दिखा सानूं असी आस लगाए हां
दर तेरे ते आवांगे २

चरना ते शीश झुका अपनी भूल बख्शावांगे
सानूं मैंना तू भुली ना
पुत्र यां अस्सी तेरे तू साड़ी है जी मां
मां पुत्र नूं प्यार करे २
जो वो अखे द्वार तेरे उसनूं मां तार देवे
मैया शेरा बाली ऐ २...

पचरंग चोले ने मैया दी चाल निराली है
जो वो तेरे द्वार पे आवेगा
मंगला मंगिया मुरादां मैया कोलो पावेगा
चल भक्तां द्वारे ते २
माता तेरी आस पुजे जे तू आवे द्वारे ते
शेरां बाली मैया ऐ २...

शेरां दी सवारी करके हाथ फड़या खंडा ऐ
जो वी द्वार ते आता जावे २
खाली ओ जावे नहीं भर झोलियां लै जावे
मय्या बडी दयालु ऐ २
अपने मां भक्तां लई बनी बडी कृपालु ऐ
सुन छान्दया राही वें २
रस्ता दिखा सानूं जित्थे रहन्दी महा माई ऐ
मैं वो द्वार ते चलों आं २
शेरां वाली मय्या ने सानूं चिट्ठियां खलियां वे
दो पत्र अनरा दे

माता जी दर्शन नूं आए दिन ने बहारां दे
पाथ लगी हुई मैंहदी ऐ
दर्शन पा भक्ता तैनूं माया कहन्दी ऐ
शेरां वाली महामाया ऐ…

चल जल्दी भक्तां वे तैनूं मां ने बुलाया ऐ
चैत्र दे नुराते न २
मय्या तेरे भक्तां ने आए हां २
असी द्वारे ते आए हां २
'मंगल' दास मय्या तेरा २
होर न सहारा कोई उस फड़या हैं पल्ला तेरा

कीर्तन

तेरे नाम दी जोत जगाई
जय नाम दा जोत जगाई
मंगा दर्शन अज महामाई
जय माता दी बोल बोल के
ना जाना कुछ पूजा करनी
दुख दूर करो मां दुख हरनी
तेरे दर दाती अलख जगाई
जय माता दी बोल बोल के
तेरे नाम दी जोत···
आए हां दर आस लगाके
भार गुनाहां दा सिर ते चाचे
लय खैर लई झोली मां बिछाई
जय माता दी बोल के
तेरे नाम दी जोत···
मेहर मां जिसपे तेरी होई
थोड़ न रहिन्दो उसनूं कोई
मैं बो अज आया तेरे दर माई
जय माता दी जोत···

बिन दर्शन किवे जा`ं निर्बल
नहीं छड़नी तेरे दर दी सरदल
गल दिया दी मैं खोल सुनाई
जय माता की बोल बोल के
तेरे नाम दी जोत...

दो का पहाड़ा

दो एकम दो-तू मन की मैल धो
दो दूनी चार-हो जा दर्शन को तैयार
दो तीया छः-ना बैर किसी से ले
दो चौक आठ-कर मय्यां का पाठ
दो पंजे दस-कर ले पाप से बस
दो छक्के बारह-कोई साथ ना जाए तुम्हारे
दो सत्ते चौदह-संग संतों के होले
दो अठ्ठे सोलह-सब सगत जय जय बोले
दो नमा अठारह-आया मय्या का द्वारा
दो धमां बीस-सब झुकाओ शीश

हमारे नये प्रकाशन

* जन्म कथा बड़ी *

इस किताब में वैष्णों देवी की पूरी कथा आरती व स्थानों के चित्र आदि दिए गये हैं। तथा यात्रा के नियम और यात्रा का पूरा हवाला दिया गया है। जहां-जहां भी देवी ने जो चमत्कार किये उनका पूरा-पूरा ब्योरा दिया गया है।

इस पुस्तक का मूल्य ८/-रु. है।

* नौ देवियों की अमर कहानी *

इस पुस्तक में नौ देवियों की पूरी कहानी सुन्दर चित्रों सहित दी गई हैं। जो … मुख्य स्थान हैं जिनकी मान्यता पूरे देश भारत में है जो नौ देवियों ने अलग-अलग अवतार धारण किये थे उन अवतारों की चित्र सहित कहानी बहुत ही सुन्दर ढंग … तैयार करके प्रस्तुत की गई हैं।

मूल्य १५/…

पुस्तक मिलने का स्थान:—

भवानी पुस्तक महल

कटरा वैष्णों देवी (जम्मू)